04- पिता के कुछ पत्र जो पुत्र के नाम लिखे गए!

05- अजंता के प्रति विद्यार्थियों का प्रेम और कला विद्यालय की यात्रा

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 24 नवंबर, 2024

06- पुलिस लगातार कर रही फरार आरोपियों की...

07- ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों का जादू बरक़रार

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 57, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

चुनाव विश्लेषण

बहनों को सरकारी नेग अब चुनाव जीतने का शर्तिया फार्मूला !

अजय बोकिल

महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ भाजपानीत महाआघाड़ी की प्रचंड जीत और विपक्षी कांग्रेसनीत महाविकास आघाड़ी की दारूण पराजय एवं झारखंड में झारखंड मुक्ति मोर्चा की अगुवाई में यूपीए की सत्ता में शानदार वापसी के मूल में कॉमन फैक्टर इन राज्यों में सत्तारूढ़ सरकारों द्वारा महिलाओं को सीधा आर्थिक लाभ देना है। महाराष्ट्र में यह कमाल युति सरकार की 'लाडकी बहिण' योजना ने तो झारखंड में झामुमो गठबंधन सरकार की 'मइया सम्मान योजना' ने किया। उस पर योगी आदित्यनाथ के 'बटेंगे तो कटेंगे' नारे ने महाराष्ट्र में बहुसंख्यक वोटरों को महायुति और एनडीए के पक्ष में एकजुट होने को इस कदर प्रेरित किया कि महायुति के घटक अजित पवार की राकांपा द्वारा खड़े किए कुछ मुस्लिम उम्मीदवार भी इस लहर में तर गए। इसी नारे की बिना पर योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश की 9 विधानसभा सीटो के उपचुनाव में 7 पर भगवा फहरा गए। इस चुनाव ने अब महाराष्ट्र में असली व नकली शिवसेना तथा राष्ट्रवादी कांग्रेस की बहस को बेमानी करार दे दिया है, भले ही इसको लेकर कानूनी लड़ाई चलती रहेगी। महाराष्ट्र में पहली बार मतदाता ने ठाकरे परिवार के नेतृत्व चाहे उद्धव हो या राज ठाकरे, को लगभग नकार दिया है। सत्ता के लोभ में बालासाहब ठाकरे का हिंदुत्व छोड़कर कांग्रेस व शरद पवार की राकांपा के साथ जाने वाले शिवसेना (उद्धव गुट) के प्रमुख उद्धव ठाकरे और बरसों से महाराष्ट्र की राजनीति धुरी रहे शरद पवार के नेतृत्व की चमक को इस हार ने बहुत फीका कर दिया है। समग्रता में महाराष्ट्र के चुनाव को समझें तो शरद पवार की चाणक्य नीति को इस चुनाव में केन्द्रीय गृह मंत्री और भाजपा के चाणक्य अमित शाह ने न केवल जबर्दस्त पटखनी दी है बल्कि विपरीत विचारधारा के उद्धव को राज्य का मुख्यमंत्री बनाकर जो घोड़ापछाड़ दांव पवार ने भाजपा के खिलाफ चला था, शाह ने उसका ब्याज समेत बदला ले लिया है। नतीजा यह रहा कि जिस राकांपा को मतदान के दिन तक मआवि का सबसे दमदार घटक माना जा रहा था, वह आघाड़ी की सबसे कमजोर कड़ी साबित हुई। अमित शाह ने संघ की आलोचना के बाद भी अजित पवार को साथ रखा। लोकसभा चुनाव में चाचा शरद से मात खाने के बाद भतीजे अजित पवार ने इस बार जमकर ताकत झोंकी और चाचा को साफ संदेश दे दिया कि अब उन्हें राजनीति से संन्यास ले लेना चाहिए। अगर महाराष्ट्र में इस चुनाव में भाजपा को अब तक की सर्वाधिक सीटें मिली हैं तो इसका श्रेय उप मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस की मेहनत, पार्टी अनुशासन का पालन और धैर्य को भी जाता है।

यूं तो महाराष्ट्र और झारखंड दोनो राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणामों पर पूरे देश की नजर थी। लेकिन महाराष्ट्र के नतीजे देश की भावी राजनीति तय करेंगे। लोकसभा चुनाव के बाद देश में मोदी मैजिक फीका पड़ने और हिंदुत्व की धार भोंथरी होने की बात कही जा रही थी, वह जादू अब नए जलवे के साथ लौट रहा है। यह हमने हरियाणा के विस चुनाव में देखा और अब महाराष्ट्र व यूपी में देख रहे हैं। हालांकि झारखंड में यह जादू नहीं चला तो इसकी वजह बीजेपी की गलत रणनीति और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी से आदिवासियों में उनके प्रति उपजी सहानुभूति ज्यादा थी। लेकिन महाराष्ट्र में पार्टी की प्रचंड जीत ने झारखंड की हार के गम को काफी हद तक धो दिया है।

यह बात अब कांच की तरह साफ है कि महिलाओं को आर्थिक मदद देकर मतदाता के रूप में उनका समर्थन जीतने का जो लाजवाब गेमचेंजर नुस्खा मप्र में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने ईजाद किया था, वह न सिर्फ भाजपा बल्कि हर सत्तारूढ़ पार्टी के लिए जीत का शर्तिया नुस्खा साबित हो रहा है। यही कारण है कि महिलाएं बड़ी संख्या में वोट कर रही हैं और उस सत्तारूढ़ पार्टी के पक्ष में वोट कर रही हैं, जो हर माह उनके खाते में निश्चित राशि सीधे जमा कर रही है। सभी मुख्यमंत्री इस आर्थिक मदद को राज्य की बहनों को 'भाई का नेग' करार दे रहे हैं। बदले में बहनाएं उन पर वोट न्यौछावर कर रही हैं। हरियाणा में हमने यह सैनी सरकार की 'लाडो बहना योजना' के रूप में तो महाराष्ट्र में 'लाडकी बहिण' और झारखंड में 'मइया सम्मान योजना' के रूप में देखा। अब बाकी राज्यो में भी सरकारें अपनी सत्ताएं बचाने इसी राह बढ़ेंगी। संक्षेप में कहें तो अब महिलाएं ही सत्ता की रक्षक के रूप में उभर रही हैं। आश्चर्य नहीं कि केन्द्र में मोदी सरकार भी अगले आम चुनाव के पहले बहनों के लिए ऐसी ही कोई योजना लेकर आ जाए। इसमें खास बात यह है कि महिलाओं को लाभार्थी बनाने के वादे विपक्षी पार्टियां भी अपने घोषणा पत्रों में उसी शिद्दत के साथ कर रही हैं, लेकिन बहनो को वादों से ज्यादा शायद देवाल भाई पर भरोसा है।

महाराष्ट्र चुनाव नतीजों में योगी आदित्यनाथ के चर्चित नारे 'बंटेंगे तो कटेंगे' का भी गहरा असर दिखा है। अधिकांश सीटों पर हिंदू वोट महायुति के पक्ष में एकजुट हुए हैं। यह एकजुटता भी प्रति-एकजुटता के रूप में ज्यादा है। क्योंकि 'बंटेंगे तो कटेंगे' में यह कहीं भी नहीं कहा गया कि एकजुटता का यह आह्वान निश्चित रूप से किसके खिलाफ है। लेकिन मुसलमानों ने इसे अपने खिलाफ माना और वे मोदी, योगी व भाजपा के विरूद्ध एकजुट हुए। हिंदू समाज में इसका प्रति ध्रुवीकरण स्वयमेव भाजपा व महायुति के पक्ष में हुआ। इस पूरे ध्रुवीकरण में कांग्रेस असहाय सी दिखी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी लोकसभा चुनाव की तरह इस बार भी हाथ में संविधान की प्रति लहराते संविधान बचाने की गुहार लगाते दिखे। लेकिन 'संविधान बचाने' का मुद्दा उस 'काठ की हांडी' की तरह साबित हुआ, जो दूसरी बार विस चुनाव के चूल्हे पर नहीं चढ़ सकी। योगी के बाद पीएम मोदी ने 'एक हैं तो सेफ हैं' का नारा दिया, उसका भी असर हुआ। मतदाताओ ने अपनी रोजमर्रा की तकलीफों, किसानों ने उपज का कम भाव मिलने की नाराजी, युवाओं ने बेरोजगारी जैसे जमीनी मुद्दों को दरकिनार कर महायुति को वोट किया।

महाराष्ट्र का यह पहला विस चुनाव है, जिसमें कोई भी पार्टी सदन में अधिकृत विपक्ष का दर्जा नहीं पा सकेगी। लोकसभा में अच्छा प्रदर्शन करने वाली कांग्रेस रणनीतिक असमंजस और कमजोर संगठन के कारण अपने न्यूनतम आंकड़े पर जा पहुंची है। इन नतीजों के बाद शरद पवार, उद्धव ठाकरे के साथ साथ कांग्रेस को भी अपने वजूद को टिकाए रखने की लड़ाई नए सिरे से लड़नी पड़ेगी। उधर यूपी में भी बाबा योगी आदित्यनाथ ने 9 में से 7 विधानसभा सीटें जीतकर 2027 के विस चुनाव का सत्ताधीश कौन होगा, इसकी इबारत लिख दी है।

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।

संपर्क-

9893699939

ajaybokil@gmail.com

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

महाराष्ट्र में लौटकर आ ही गया समंदर!

● शरद पवार तक जो नहीं कर पाए वो देवेन्द्र फणडवीस ने कर दिखाया ● महायुति की प्रचंड जीत,एनडीए गठबंधन ने फेल किए सारे समीकरण

करिश्माई साबित हुए फडणवीस

महाराष्ट्र के 64 सालों के सियासी इतिहास में वह महज दूसरे ऐसे नेता हैं जिन्होंने मुख्यमंत्री के तौर पर अपना 5 साल का कार्यकाल पूरा किया। वसंतराम नाइक के बाद दूसरे नेता। ऐसा करिश्मा जिसे महाराष्ट्र की राजनीति का चाणक्य कहे जाने वाले शरद पवार भी कभी नहीं कर पाए जो 4 बार मुख्यमंत्री बने। 47 साल बाद महाराष्ट्र के किसी मुख्यमंत्री ने अपना पूरा कार्यकाल पूरा किया था। इतना ही नहीं, सूबे का दूसरा सबसे युवा मुख्यमंत्री। इस मामले में सिर्फ शरद पवार से पीछे। एक ऐसा नेता जिसने लगातार तीन बार बीजेपी की विधानसभा चुनाव में सेंचुरी लगवाई। संयोग देखिए कि करीब 5 दशक में पहली बार कार्यकाल पूरा करने वाला मुख्यमंत्री पार्टी के फैसले को खुशी-खुशी स्वीकार करते हुए डेप्युटी सीएम बन जाता है।

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र की सभी 288 विधानसभा सीटों के रिजल्ट आ गए हैं। महायुति गठबंधन 232 से ज्यादा सीटों पर जीत दर्ज कर चुका है। राज्य में भाजपा गठबंधन की सरकार बनना तय है। कांग्रेस के नेतृत्व वाली महाविकास अघाड़ी 48 सीटों के आसपास सिमट गई है। मुख्यमंत्री सीएम शिंदे और देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि तीनों पार्टी मिलकर तय करेंगी कि राज्य का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा। इससे पहले फडणवीस ने सोशल मीडिया पर लिखा था- एक हैं तो सेफ हैं। महायुति में बीजेपी, शिवसेना (एकनाथ शिंदे) और एनसीपी (अजित पवार) शामिल हैं, जबकि महाविकास अघाड़ी में कांग्रेस, शिवसेना (उद्धव ठाकरे) और एनसीपी (शरद पवार) हैं। महाराष्ट्र में बीजेपी के महायुति गठबंधन को इस बार महा जीत मिल गई है। इन नतीजों से जहां बीजेपी समेत पूरे महायुति में खुशी का माहौल है, वहीं, कांग्रेस के महाविकास अघाड़ी खेमे में निराशा का माहौल है। फडणवीस ने एक बयान में कहा था एक दिन समंदर लौट कर जरूर आएगा।

झारखंड में हेमंत सोरेन की जेएमएम गठबंधन का जलवा

● बच्चों के साथ शेयर की फोटो,पत्नी कल्पना भी चुनाव जीतीं

रांची (एजेंसी)। झारखंड विधानसभा चुनाव के नतीजों में हेमंत सोरेन की झामुमो का दोबारा सत्ता में आना तय हो गया है। 81 सीटों पर वोटों की गिनती के दौरान झामुमो गठबंधन ने 56 सीटों पर निर्णायक बढ़त जीत दर्ज कर ली है। यह आंकड़ा 41 के बहुमत से 15 सीट ज्यादा है। भाजपा गठबंधन 24 सीटों पर सिमट गया है। अन्य 1 सीट पर बढ़त बनाए हुए हैं। राज्य में 13 और 20 नवंबर को 81 सीटों पर मतदान हुआ था, 68 फीसदी वोटिंग हुई। यह अब तक की सबसे ज्यादा वोटिंग प्रतिशत है। 2019 विधानसभा चुनाव में जेएमएम 30, कांग्रेस 16 और राजद ने एक सीट पर जीत दर्ज की थी। तीनों पार्टियों का गठबंधन था। तब मुख्यमंत्री जेएमएम नेता हेमंत सोरेन बने थे। बीजेपी को 25 सीटें मिली थीं। सरायकेला से पूर्व सीएम चंपाई सोरेन चुनाव जीत गए हैं। धनवार से भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबू लाल मरांडी चुनाव जीत गए हैं। गांडेय से हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना जीत गई हैं। तीनों सीटों पर रिजल्ट की आधिकारिक घोषणा हो चुकी है। हेमंत सरकार के 4 मंत्री दीपिका पांडेय, बन्ना गुप्ता, हफिजुल अंसारी, बेबी देवी और मिथिलेश ठाकुर चुनाव हार गए हैं।

बुधनी में भाजपा के रमाकांत 13 हजार वोटों से जीते

विजयपुर में कांग्रेस से भाजपा में आकर मंत्री बने रावत हारे,कांग्रेस के मुकेश मल्होत्रा जीते

सीहोर/श्योपुर (नप्र)। पूर्व सीएम शिवराज सिंह की सीट रही बुधनी में उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी रमाकांत भार्गव करीब 13 हजार वोटों से जीत गए हैं। उन्होंने कांग्रेस के राजकुमार पटेल को हराया है। बता दें कि 2023 के चुनाव में यहां भाजपा के शिवराज सिंह चौहान 1,04.974 वोटों से जीते थे। जीत का ये अंतर करीब 93 हजार घटकर करीब 13 हजार हो गया है।

इधर, कांग्रेस से भाजपा में आकर सरकार में वन मंत्री बने रामनिवास रावत विजयपुर सीट से उपचुनाव हार गए हैं। यहां कांग्रेस के मुकेश मल्होत्रा ने 7364 वोटों से जीत दर्ज की है। रावत 16वें राउंड तक आगे थे। भाजपा ने री-काउंटिंग की मांग करते हुए निर्वाचन अधिकारियों को आवेदन दिया है।

मंत्री रामनिवास रावत हारे, कांग्रेस उम्मीदवार मुकेश मल्होत्रा 7 हजार से ज्यादा वोट से जीते- श्योपुर जिले की विजयपुर विधानसभा उपचुनाव के लिए वोट की गिनती पॉलिटेक्निक कॉलेज में हुई। इसमें प्रदेश सरकार में वन मंत्री और भाजपा प्रत्याशी रामनिवास रावत चुनाव हार गए हैं। कांग्रेस प्रत्याशी मुकेश मल्होत्रा ने 7 से ज्यादा वोट से जीत दर्ज की है।

विजयपुर में 15वें राउंड के बाद बड़ा उलटफेर

पहले राउंड की काउंटिंग में कांग्रेस को 178 वोटों की बढ़त मिली। इसके बाद दूसरे से 15वें राउंड तक लगातार भाजपा आगे रही। आठवें राउंड तक तो भाजपा की लीड 8661 वोटों की हो गई थी। नौवें राउंड में ये लीड कुछ घटी। रुझान में बड़ा उलटफेर 15वें राउंड के बाद देखने को मिला, जब कांग्रेस को 3547 वोटों की बढ़त मिली, जिससे भाजपा की ओवरऑल लीड घटकर 1496 रह गई। 16वें राउंड में कांग्रेस 1842 वोटों से आगे हो निकल गई। 17वें राउंड में ये लीड बढ़कर 4747 हो गई।

महायुति की प्रचंड जीत पर बोले पीएम मोदी

जनता ने डंके की चोट पर कहा - 'एक हैं तो सेफ हैं'

नईदिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में जय भवानी, जय शिवाजी के नारे के साथ अपना संबोधन शुरू किया। उन्होंने कहा- महाराष्ट्र में विकासवाद और सुशासन की जीत हुई। झूठ और विभाजनकारी ताकतें हारी हैं। परिवारवाद की हार हुई है। पीएम मोदी बोले- जो लोग महाराष्ट्र से परिचित होंगे। उन्हें पता होगा वहां पर जय भवानी कहते हैं तो जय शिवाजी का बुलंद का नारा लगता है। आज हम यहां पर एक और ऐतिहासिक विजय का उत्सव मनाने के लिए जुटे हैं। आज महाराष्ट्र में विकासवाद की जीत हुई है। सच्चे सामाजिक न्याय की जीत हुई है। पीएम मोदी ने कहा एक हैं तो सेफ हैं।

इससे पहले भाजपा मुख्यालय पहुंचने पर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने उनका स्वागत किया। महाराष्ट्र में भाजपा गठबंधन एकतरफा जीत मिली है। वहीं, कांग्रेस गठबंधन 60 से कम सीटों पर सिमट रहा है।

मध्यप्रदेश

भाजपा के लिए जीत से ज्यादा बड़ा झटका हार का!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

दो राज्यों के विधानसभा चुनाव और कई राज्यों में हुए उपचुनाव के नतीजे कुछ भी रहे हों, पर मध्यप्रदेश की दोनों सीटों के वोटरों ने अपनी विचारधारा नहीं बदली। विजयपुर में 6 बार चुनाव जीते रामनिवास रावत इस बार पार्टी बदलकर मैदान में उतरे, पर वोटरों ने पार्टी नहीं बदली, उन्होंने कांग्रेस के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बरक़रार रखा। वही स्थिति बुधनी विधानसभा सीट पर भी रही, जहां से पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान 5 बार चुनाव जीते थे। उन्हीं के इस्तीफे से खाली हुई इस सीट पर वोटरों ने भाजपा का साथ नहीं छोड़ा। यानी विजयपुर के वोटरों ने कांग्रेस का हाथ नहीं छोड़ा, तो बुधनी के वोटर भाजपा के साथ रहे।

नतीजों को देखकर कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश में विधानसभा उपचुनाव का यह मैच टाई रहा। लेकिन, राजनीतिक नजरिए से भाजपा के लिए बुधनी की जीत से बड़ा झटका विजयपुर की हार का रहा। क्योंकि, अमूमन सत्ताधारी पार्टी उपचुनाव में कम ही हारती है। डॉ मोहन यादव के मुख्यमंत्री बनने के बाद यह पहले उपचुनाव थे, जो एक तरह से उनकी अग्निपरीक्षा थी। उनके लिए विजयपुर को जीतना बेहद जरूरी था। क्योंकि, रामनिवास रावत को कांग्रेस से हाथ छुड़ाकर वे ही भाजपा में लाए थे। उन्हें मंत्री पद से भी नवाजा, पर ये सब वोटरों को प्रभावित नहीं कर सका और रामनिवास रावत हार गए।

विजयपुर उपचुनाव की गिनती 21 राउंड चली। 16वें राउंड के बाद चुनाव का समीकरण पूरी तरह पलट गया। लगातार आगे चल रही भाजपा 16वें राउंड से अचानक पिछड़ गई और 21 राउंड में हार गई। वन एवं पर्यावरण मंत्री और भाजपा उम्मीदवार रामनिवास रावत को 21वें राउंड की गिनती के बाद 93,105 वोट मिले। भाजपा से कांग्रेस में गए मुकेश मल्होत्रा 7,364 वोटों से चुनाव जीत गए। उन्होंने 1,00,469 वोट हासिल किए। यहां चुनाव लड़े 11 उम्मीदवारों से ज्यादा वोट 1087 नोटा को मिले।

बुधनी की जीत शिवराज से कमजोर - विजयपुर के चुनाव नतीजे ने एक बात यह भी स्पष्ट कर दी, कि पिछले 6 विधानसभा चुनाव में वोटर कांग्रेस के साथ थे, न कि उनकी उम्मीदवार रामनिवास रावत के प्रति प्रतिबद्धता थी। इस बार रावत ने पार्टी बदलकर दांव खेला, पर वोटरों ने अपनी विचारधारा नहीं बदली। ये राजनीति करने वालों के लिए एक सबक है कि वे वोटरों को अपनी मिल्कियत न समझें। यदि वास्तव में वोटर रामनिवास रावत के साथ होते, तो इस बार का चुनाव नतीजा उन्हीं के पक्ष में होता, पर ऐसा नहीं हुआ।

बुधनी के विधानसभा उपचुनाव के नतीजे का संदेश भी इससे अलग नहीं है। यहां से शिवराज सिंह 5 बार चुनाव जीते और अभी भी इस सीट को उनकी ही सीट माना जाता है। यहां से भाजपा के रमाकांत भार्गव चुनाव जीते हैं। उन्होंने 13109 वोट से सीट जीती। मुकाबले में खड़े कांग्रेस के राजकुमार पटेल को 93577 वोट मिले। शिवराज सिंह चौहान ने 2023 के विधानसभा चुनाव में यह सीट कांग्रेस के विक्रम मस्ताल को 14974 वोट से हराकर जीती थी।

यहां वोटों की 13 राउंड की गिनती में पहले राउंड में कांग्रेस के राजकुमार पटेल को करीब 6 हजार वोटों की लीड मिली। दूसरे राउंड में यह कम हो गई। फिर वे 10वें राउंड तक पिछड़ते रहे। 11वें राउंड में उनकी सिर्फ 91 वोट की लीड मिली, जो हार का स्पष्ट संकेत था। आखिरी दो राउंड में भार्गव को करीब 16 हजार की निर्णायक बढ़त मिली। 13वें राउंड की गिनती में भाजपा को 7,978 और कांग्रेस को 5,440 वोट मिले। भाजपा के रमाकांत भार्गव को कुल 1,7269 और राजकुमार पटेल को 93,431 वोट मिले। भाजपा ने बुधनी सीट को 13,901 वोटों से जीत लिया। आंकड़ों के हिसाब से रमाकांत भार्गव की जीत को उल्लेखनीय तो नहीं कहा सकता। जिस सीट को शिवराज सिंह चौहान ने एक लाख की जीत के बाद छोड़ा था, उसे भाजपा ने जीत तो लिया, पर उस तुलना में यह जीत बहुत छोटी कही जाएगी।

सुप्रभात

एक स्त्री चलती है सुबुकती हुई, हड़बड़ाई
सर पर अपने एक बदरंग घर उठाए
एक स्त्री सतत प्रतीक्षारत है
एक रेलवे स्टेशन पर जहां
रुकती ही नहीं कोई रेलगाड़ी

एक स्त्री उगाए जुगनू का प्रभामंडल एक
चलती जाती है तारकों की ओर
एक स्त्री सुनिश्चित करती है उसके पंख अपने
स्थान पर ही स्थित हों
एक उड़ान पर स्वयं को
प्रक्षेपित करने से पहले

एक स्त्री उतरती है अकाल में
मकई के एक खेत के भीतर
अपने कंधों पर धरे एक वर्षामेघ
एक स्त्री गाती है एक गीत एक
फलवृक्ष को करती विवश
हो जाने को फूट फूट कर पुष्पित,
भरे पतझड़ में

दमकती है एक स्त्री उस राख में
एक चिंगारी की तरह
जो उसके आग लगा दिए गए
छोटे से घर की थी
एक स्त्री लपक कर उठाती है अपना शिशु
और सीमा की ओर पलायन करती है
देखते ही एक लड़ाकू विमान को नीचे की
ओर गोता लगाते हुए

एक स्त्री धार देती है वर्णमाला के अक्षरों को
और बाहर निकाल लाती है
दंत विषैले गहराते अंधकार के
एक स्त्री बंद करती है बड़ी
ज़ोर से द्वार अपने घर के
निकल आती है बाहर और
गुनगुनाती है एक धुन सड़क पर

एक स्त्री देखती है आकृति ईसा की सलीब पर
और व्यथा में चीखती है, पुत्र, मेरे प्रिय पुत्र!
एक स्त्री अपने पुरुष को पट्टिका पर ही छोड़ देती है
खजुराहो में और स्वयं ही पा लेती है सुख अपना

मेरे देखते ही देखते एक स्त्री, जिसकी
मांसपेशियां कठोर होती जाती हैं
लौह और अग्नि की देवी में बदल जाती है
एक स्त्री तेज़ करती है अपनी दरांती बार बार
जंगल की जलधारा में एक
पत्थर पर उसे रगड़ते हुए

एक स्त्री टैंक के ऊपर चढ़ती है
और प्रस्तुत करती है
फौजियों को फूल, धरे चंद्रमा की मुस्कान
एक स्त्री, थक कर पृथ्वी पर अपने जीवन से
अंतरिक्ष की ओर प्रस्थान करती है
अपनी ही अस्थियों से बने एक वाहन में

एक पुरुष भौंचक खड़ा है सड़क के किनारे
सड़क पार करने में भयभीत बहुत।

- के. सच्चिदानंदन

अनुवादः अपर्णा अनेकवर्णा

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 24 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

खतरे में उद्धव ठाकरे का अस्तित्व, 20 सीटों पर ही सिमटी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव रिजल्ट चौंकाने वाले रहे। महायुति ने प्रचंड जीत हासिल कर सबको चौंका दिया। बीजेपी, शिवसेना और एनसीपी की अगुवाई वाली महायुति को

बहुमत मिल गया है। ऐसे में इस महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में उद्धव ठाकरे को बड़ा झटका लगा है। उद्धव ठाकरे की शिवसेना महज 20 सीटों पर सिमट कर रह गई है। वहीं एकनाथ शिंदे की शिवसेना ने 54 सीटों पर चुनाव जीत गई है। नतीजों से साफ है कि महाराष्ट्र की जनता ने शिंदे की शिवसेना पर फैसला कर दिया है।

विश्व स्तर पर छा गई मोदी की कूटनीति

● 31 वैश्विक नेताओं के साथ की द्विपक्षीय बैठक

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी तीन देशों की यात्रा के दौरान 31 वैश्विक नेताओं से मुलाकात की। पीएम मोदी अपनी यात्रा के शुरुआती चरण में नाइजीरिया पहुंचे, जहां पर उन्होंने वहां के राष्ट्रपति के साथ द्विपक्षीय बैठक में हिस्सा लिया था। इसके बाद पीएम जी20 समारोह में शामिल होने के लिए ब्राजील पहुंचे। ब्राजील में पीएम मोदी की 10 वैश्विक नेताओं से द्विपक्षीय बातचीत हुई। इसके बाद गुयाना में भी पीएम ने नौ देशों के नेताओं के साथ द्विपक्षीय मुलाकात की।

अडाणी मामले से आंध्र बदनाम हुआ, हम जल्द ऐक्शन लेंगे

अमरावती (एजेंसी)। भाजपा की सहयोगी पार्टी तेलगु देशम पार्टी के अध्यक्ष और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने अडाणी रिश्वत मामले पर प्रतिक्रिया दी है। नायडू ने विधानसभा में कहा कि

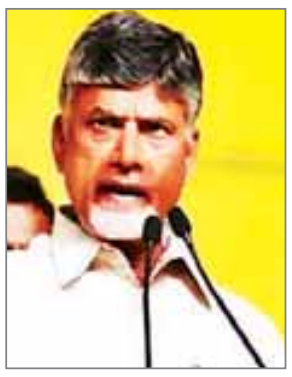

अडाणी रिश्वत मामले से आंध्र प्रदेश बदनाम हुआ है। उन्होंने कहा कि अडाणी रिश्वत मामले की चार्जशीट हमारे पास पहुंची है। हम जल्द एक्शन लेंगे। सभी दस्तावेजों की जांच की जा रही है। सरकार को लोगों के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। ऐसे अपराध तब तक दोहराए जाएंगे, जब तक ऐसे काम करने वालों को न्याय के कटघरे में नहीं लाया जाता। दरअसल, उद्योगपति गौतम अडाणी पर गुरुवार को अमेरिका में सोलर एनर्जी से जुड़ा कॉन्ट्रैक्ट हासिल करने के लिए रिश्वत देने और धोखाधड़ी करने के आरोप लगे हैं। न्यूयॉर्क की फेडरल कोर्ट में यह केस दर्ज हुआ था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 10 हजार गायों की क्षमता वाली हाईटेक गौ-शाला का किया भूमि-पूजन

जिसके घर में गाय का कुल, वह घर गोकुल : मुख्यमंत्री यादव

● 25 एकड़ क्षेत्र में 15 करोड़ रूपए की लागत से बनेगी गौ-शाला

● घर-घर बछिया उपलब्ध कराकर दुग्ध उत्पादन को बढ़ाया जाएगा

● गौ-शाला स्थापित करने की दिशा में सक्रियता से कार्य जारी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गौ-माता में 33 करोड़ देवी देवताओं का वास है। जो भी गोवंश का पालन करे वही गोपाल है, जिसके घर में गाय का कुल वह घर गोकुल है।

अतः प्रत्येक व्यक्ति और परिवार को घर में गोपालन के लिए पहल करना चाहिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बिना धर्म, भाषा, जाति और क्षेत्र के भेदभाव के हमें गौ-पालन को प्रोत्साहित करना है। परंपरागत रूप से भी भारत में सभी धर्म और जाति के लोग गौ-पालन करते हैं और यही हमारी सामाजिक समरसता का प्रतीक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव भोपाल के ग्राम बरखेड़ी डोब में 10 हजार गायों की क्षमता वाली हाईटेक गौ-शाला के भूमि-पूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उल्लेखनीय है कि भोपाल जिले के बरखेड़ी डोब ग्राम में 25 एकड़ क्षेत्र में 15 करोड़ रूपए की लागत से गौ-शाला का निर्माण होने जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हाईटेक गौ-शाला भूमि-पूजन स्थल पहुंचने पर सर्वप्रथम गौ-माता को दुलार कर नमन किया तथा उन्हें आहार सामग्री अर्पित की। इस अवसर पर प्रदेश में गोवंश संरक्षण और दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए संचालित गतिविधियों पर लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

बदलती जीवनशैली में निरंतर बढ़ रहा है गौ-शालाओं का महत्व

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विश्व के अधिकांश देशों में दुग्ध की आपूर्ति गौ-माता ही करती हैं। सनातन संस्कृति में गौ-माता का महत्व इससे स्पष्ट हो जाता है कि मानव जीवन की पूर्णता के लिये गौ-दान आवश्यक बताया गया है। बदलती जीवनशैली में गौ-शालाओं का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। इसे देखते हुए राज्य शासन द्वारा विशाला गौ-शाला स्थापित करने की दिशा में सक्रियता से कार्य किया जा रहा है, वर्तमान वर्ष में अब तक 300 गौ-शालाओं का पंजीयन हुआ है। विभिन्न सामाजिक संगठन भी गौ-शाला संचालन में पहल कर रहे हैं। गौ-पालन परिवारों के आर्थिक सशक्तिकरण के साथ परिवार को पोषक खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने में भी सहायक है। अतः घर-घर बछिया उपलब्ध कराकर दुग्ध उत्पादन को प्रोत्साहित किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार शीघ्र ही दुग्ध उत्पादन पर बोनस देने की व्यवस्था कर रही है। वर्तमान में मध्यप्रदेश, देश के कुल दुग्ध उत्पादन में 9 प्रतिशत का योगदान देता है। इसे अगले पाँच वर्ष में 20 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य है।

सूखी सेवनिया रोड को फोरलेन किया जाएगा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शासकीय विद्यालय सूखी सेवनिया को सीएम राइज विद्यालय बनाने और सूखी सेवनिया रोड को विभागीय मद अनुसार फोरलेन बनाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि बरखेड़ी डोब क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित कर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय के माध्यम से गौ-माता से संबंधित डिग्री-डिप्लोमा कोर्स आरंभ किया जाएगा। स्वामी श्री अच्युतानंद जी महाराज ने गौ-संरक्षण एवं गौ-संवर्धन के क्षेत्र में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सरकार गठन के बाद अभी तक के अल्प समय में प्रदेश में लगभग 50 हजार गायों के पालन-पोषण की व्यवस्था की है और प्रदेश की लाखों गायों की देखभाल का संकल्प लिया है। मध्यप्रदेश सरकार इस वर्ष को गौ-संवर्धन वर्ष के रूप में मना रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश के समग्र विकास को समर्पित

विधायक श्री रामेश्वर शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार महिलाओं, युवा, किसानों, मजदूर, वरिष्ठ जन के कल्याण के लिए समर्पित है। राज्य सरकार द्वारा गौ-वंश के संरक्षण के लिए व्यापक स्तर पर गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव अधोसंरचना विकास, शिक्षा, चिकित्सा सहित प्रदेश के समग्र विकास के लिए सक्रिय हैं। पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल ने आभार व्यक्त किया।

मेडिकल पीजी काउंसिलिंग 24 नवंबर रात 12 बजे तक

जबलपुर हाई कोर्ट का डायरेक्टर मेडिकल एजुकेशन को आदेश, पहले राउंड के रिजल्ट पर भी रोक

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर हाई कोर्ट ने एमडी-एमएस कोर्स में दाखिले के लिए नीट-पीजी काउंसिलिंग के पहले राउंड के रिजल्ट घोषित करने पर अगली सुनवाई तक रोक लगा दी है। रीवा निवासी डॉक्टर अभिषेक शुक्ला व अन्य जिलों के डॉक्टरों की ओर से हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई है।

शुक्रवार को इस पर सुनवाई करते हुए जस्टिस एसए धर्माधिकारी एवं जस्टिस अनुराधा शुक्ला की डिवीजन बेंच ने डायरेक्टर मेडिकल कॉलेज को 24 नवंबर रात 12 बजे तक पहले राउंड की काउंसिलिंग जारी रखने के निर्देश दिए हैं।

हाई कोर्ट ने सुनवाई के दौरान डायरेक्टर मेडिकल एजुकेशन को यह भी कहा है कि जब तक पहले राउंड की काउंसिलिंग ना हो जाए तब तक उसका रिजल्ट घोषित नहीं किया जाएगा। हाई कोर्ट ने डीएमई एवं अन्य को नोटिस जारी करते हुए पूरे मामले में जवाब पेश करने के निर्देश भी दिए हैं। अब मेडिकल पीजी काउंसिलिंग के मामले में अगली सुनवाई 28 नवंबर को होगी।

इसलिए लगाई थी याचिका

डॉक्टर अभिषेक शुक्ला व अन्य जिलों के डॉक्टरों ने हाईकोर्ट में याचिका दायर करते हुए कहा कि पीजी कोर्स में दाखिले के लिए नीट ने मेरिट लिस्ट तैयार की थी, यह सूची नॉर्मलाइजेशन प्रक्रिया अपनाते हुए जारी की गई है। याचिकाकर्ता की तरफ से अधिवक्ता आदित्य संघी ने हाईकोर्ट को दलील दी कि राज्य शासन ने मेरिट लिस्ट तैयार करने में दूसरी बार नॉर्मलाइजेशन प्रक्रिया को अपनाया, इस कारण नीट की मेरिट लिस्ट में अच्छी रैंकिंग होने के बावजूद भी प्रदेश की मेरिट लिस्ट में याचिकाकर्ताओं का नाम नीचे हो गया।

लोकायुक्त ने महिला पार्षद को रिश्वत लेते पकड़ा

नीमच में रकम लेते पति के साथ गिरफ्तार ; शोरूम मालिक से मांगे थे सवा लाख रुपए

नीमच (नप्र)। नीमच में उज्जैन लोकायुक्त की टीम ने शनिवार सुबह कांग्रेस पार्षद और पति तो रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है। वार्ड नंबर 20 की पार्षद रानी मसूदी के पति साबिर मसूदी सवा लाख रुपए की रिश्वत ले रहे थे। इसी दौरान लोकायुक्त की टीम पहुंच गई।

ये दोनों रिश्वत की रकम लेने शिकायतकर्ता के भारत माता चौराहा स्थित निर्माणाधीन शोरूम पहुंचे थे। आरोप है कि दोनों पति-पत्नी नियमों का हवाला देकर निर्माण रुकवाने की धमकी दे रहे थे। इसकी एवज में उन्होंने रिश्वत मांगी थी।लोकायुक्त पुलिस ने की पार्षद रानी मसूदी और उनके पति साबिर मसूदी पर कार्रवाई।

शोरूम निर्माण को लेकर मांगी थी रिश्वत

शिकायतकर्ता नकुल जैन, निवासी 106 राजस्व कॉलोनी नीमच ने 14 नवंबर को उज्जैन लोकायुक्त पुलिस को शिकायत की थी। शिकायत में बताया कि पार्षद पति कबीर मसूदी की ओर से शोरूम निर्माण में मार्जिन ऑफ ओपन स्पेस का उल्लंघन करने के नाम पर रिश्वत मांगी जा रही है। जिसमें पार्षद रानी मसूदी की भी सहमति है। शनिवार को जैसे ही साबिर ने रिश्वत की राशि ली लोकायुक्त टीम ने पकड़ लिया। मामले में साबिर मसूदी और पार्षद रानी बी मसूदी के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत केस दर्ज कर कार्रवाई की गई है।पार्षद रानी मसूदी के पति साबिर मसूदी शोरूम निर्माण को लेकर शिकायत कर रहे थे।

लोकायुक्त जांच में शिकायत सही पाई गई

उज्जैन लोकायुक्त डीएसपी सुनील तालान ने बताया कि 14 नवंबर को लोकायुक्त पुलिस को नकुल जैन की ओर से शिकायत मिली थी। जांच में शिकायत सही पाई गई। शनिवार को योजना बनाकर नकुल के निर्माणाधीन शोरूम में सवा लाख रुपए की रिश्वत लेते साबिर मसूदी को रंगे हाथों पकड़ा है। आगे की कार्रवाई की जा रही है।

शिकायतकर्ता बोला- कई बार पैसे मांगे

शिकायतकर्ता नकुल जैन ने बताया कि पार्षद रानी मसूदी और उनके पति साबिर मसूदी मेरे शोरूम निर्माण को लेकर शिकायत कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कई बार पैसों की मांग की, हमने पैसे नहीं दिए। इस बारे में मैंने 14 नवंबर को लोकायुक्त पुलिस से शिकायत की थी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का यूके-जर्मनी दौरा

प्रदेश को समन्वित विकास के केन्द्र में स्थापित करने का महत्वपूर्ण कदम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का यूके एवं जर्मनी दौरा मध्यप्रदेश को वैश्विक निवेश, तकनीकी साझेदारी और सांस्कृतिक संबंधों के केन्द्र में स्थापित करने का महत्वपूर्ण कदम है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मध्यप्रदेश की समृद्धि के लिये 24 से 30 नवम्बर तक 2 देशों यूके और जर्मनी की यात्रा पर रहेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव यूके और जर्मनी की यात्रा के दौरान प्रदेश में ऑटोमोबाइल सेक्टर, इलेक्ट्रॉनिक व्हीकल, नवकरणीय ऊर्जा, शिक्षा और खाद्य प्र-संस्करण के क्षेत्र में निवेश के लिये उद्योगपतियों एवं निवेशकों से वन-टू-वन चर्चा करेंगे। मध्यप्रदेश से यूके और जर्मनी को मशीनरी, फार्मास्यूटिकल, मेडिकल डिवाइस, टेक्सटाइल, गारमेन्ट, प्लास्टिक का निर्यात किया जाता है। प्रदेश औद्योगिक नीतियों और निवेश के अनुकूल वातावरण बनाकर देश के अग्रणी राज्यों में शुमार होने के लिये निरंतर प्रयत्न कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की यात्रा मध्यप्रदेश को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर लाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की यात्रा में यूके और जर्मनी के उद्योगपतियों, निवेशकों और एनआरआई समुदाय को मध्यप्रदेश में व्यापार-व्यवसाय के अनुकूल वातावरण और अधोसंरचनात्मक विकास से परिचित कराया जायेगा। उन्हें प्रदेश की ÷इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट पॉलिसी÷ और ÷एमएसएमई प्रोत्साहन योजनाओं÷ से भी अवगत कराया जायेगा। यात्रा में यूके और जर्मनी के प्रमुख उद्योगों और एमएसएमई से साझेदारी के अवसर तलाशे जायेंगे। प्रदेश को न्यूनतम लागत राशि में कुशल विनिर्माण केन्द्र के रूप में प्रस्तुत किया जायेगा। साथ ही राज्य के 'स्पेशल इकोनॉमिक जोन' की जानकारी साझा की जायेगी।

इंदौर के मराठी नाटकों का भोपाल के रंगमंच पर यादगार मंचन

(विवेक सावरीकर मृदुल)

मध्यप्रदेश मराठी साहित्य संघ द्वारा विगत दिनों रवीन्द्र भवन में दो दिवसीय मराठी नाट्य समारोह का आयोजन किया गया।इसमें इंदौर की प्रसिद्ध रंग संस्थाओं नाट्य भारती और अविरत के कलाकारों ने दमदार पटकथा, कल्पनाशील निर्देशन और मर्मस्पर्शी अभिनय से भोपाल रंगमंच पर अनूठी छाप छोड़ी। राजधानी के मराठी रंग प्रेमियों ने बड़ी तादाद में उपस्थित होकर इन प्रस्तुतियों का आनंद लिया।ये नाटक थे -श्रीराम जोग निर्देशित नाटक - 'हा खेळ पुन्हा खेळू' (यह खेल फिर खेलें)और अभिनय देशमुख निर्देशित नाटक फायनल ड्राफ्ट।

समारोह की पहली शाम मंचित नाटक 'हा खेळ पुन्हा खेळू' लेखक रविशंकर झिंगरे का लिखा है जिसे श्रीराम जोग ने निर्देशित भी किया है और नाटक में बुजुर्ग पिता *माधव* की केंद्रीय भूमिका भी निभाई है। वे पत्नी से अलग बेटे के साथ रहते हैं और बेटे को उन्होंने मां और पिता दोनों का प्यार दिया है।उनका बेटा सुहास (श्रीकांत डिडोळकर) उसी शहर में वुमन हॉस्टल में रहने वाली मां से मिलता तो रहता है पर पिता के हठ या अहंकार के कारण उसे घर नहीं ला पाता।इसे लेकर अक्सर खटपट होती रहती है।पर सठियाये पिता के आगे वो बेबस है। उसकी खुद की शादी की उम्र है और एक बहुत समझदार, पढ़ी- लिखी लड़की नंदिनी (श्रुतिका जोग कळमकर)से वो प्यार करता है।लड़की का भी माधवजी के घर रोज का आना-जाना है।वो उनकी देखभाल

मराठी नाट्य समारोह

भी करती है।माधवजी जल्द से जल्द दोनों की शादी कर अपने एकाकीपन को दूर करना चाहते हैं।मगर नंदिनी की मां (प्रतीक्षा बेलसरे)ऐसे घर में रिश्ते से इंकार कर देती है जहां पति और पत्नी अलग- अलग रहते हों।उसको डर है कि कहीं आगे चलकर नंदिनी और सुहास भी ऐसा कुछ न कर लें।इस बात से हैरान माधव आखिर अपना हठ छोड़ कर पत्नी रमा से अपनी पुरानी मिलने की जगह चाय की टपरी पर बुलाते हैं और केवल सुहास की शादी होने तक साथ रहने के लिए राजी कर लेते हैं।शादी भी हो जाती है, लेकिन बेटे को तब गहरा धक्का लगता है जब उसे पता चलता है कि वह रमा-माधव की असली संतान नहीं है।उसे गोपाल मंदिर से लावारिस हालत में माधवजी लाए थे।मगर उससे भी बड़ा आश्चर्य दर्शकों को तब होता है जब रमा बताती है कि वे पति- पत्नी नहीं, बल्कि केवल मित्र हैं। नन्हे सुहास को मां की कमी न महसूस हो इसलिए उन्होंने बस बचपन के 'घर -घर खेल' की तरह मां और पिता की भूमिकाएं स्वीकारी थीं। अंत में रमा घर में स्थाई रूप से आती है और नाटक का सुखांत होता है।पर दोस्ती का संबंध शारीरिक प्रेम से भी ऊपर हो सकता है,यह महसूस कर दर्शकों की आंख नम हुए बिना नहीं रहती।राम जोग को हाल ही वर्ष 2022 का शिखर सम्मान मध्यप्रदेश सरकार द्वारा घोषित हुआ है।सहज अभिनय और उत्तम संवाद अदायगी उनके बलस्थान हैं।बेटे सुहास के रूप में श्रीकांत और नंदिनी के किरदार में श्रुतिका का अभिनय भी उतना ही स्वाभाविक है।रमा की स्पष्टवादिता परंतु निर्मल-निस्वार्थ भाव को तन्वी अकोलेकर ने बहुत अच्छी तरह निभाया।शेष कलाकारों का अभिनय भी उत्कृष्ट था।नाटक में हिंदी और मराठी फिल्मों के गानों का सटीक इस्तेमाल हुआ ।मंच और प्रकाश परिकल्पना बेहतरीन थी।

नाटक ' हा खेळ पुन्हा खेळू' के दृश्य में श्रीराम जोग व श्रीरंग डिडोळकर।

नाटक 'फायनल ड्राफ्ट' के दृश्य में योजना दिघे व अभिनव देशमुख। छायाचित्र- संजय पाथरटकर

दूसरी और समापन संध्या में गिरीश जोशी लिखित प्रसिद्ध नाटक *फायनल ड्राफ्ट* का मंचन अभिनय देशमुख के निर्देशन में हुआ।इसमें अभिनय ने प्रोफेसर और योजना दिघे ने पटकथा लेखन सीखने के लिए आई छात्रा का किरदार निभाया।दो ही पात्रों वाले इस नाटक का कथानक इतना जबरदस्त था कि दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। प्रोफेसर का अपना इंस्टीट्यूट है जहां टीवी व फिल्म के लिए पटकथा लेखन सिखाया जाता है। प्रोफेसर ने अपनी कक्षा में सदा पिछड़ी रहने वाली एक छात्रा को कथा व पटकथा लेखन के गुर सिखाने के लिए घर बुलाया है।वो छात्रा की लिखी स्क्रिप्ट के ड्राफ्ट से संतुष्ट नहीं हैं और बार-बार नया ड्राफ्ट लिखकर लाने को कहते हैं। छात्रा अनेक बार लिखकर भी मूल कथानक में बदलाव नहीं करती। उसके पीछे छात्रा के अपने तर्क और कारण हैं।अनेक रोचक घटनाक्रमों के उपरांत प्रोफेसर समझ पाते हैं कि कथा के सूत्र भोगे हुए अथवा अनुभव किए गये यथार्थ से निकलते हैं।केवल कथा लेखन का तकनीकी ज्ञान होने भर से कहानी में जान नहीं आती।

छात्रा तथाकथित कमर्शियल लेखन के नकलीपन को सामने लाकर प्रोफेसर को सच का आईना दिखाती है और पहले की तरह सच्चा लेखन करने को प्रेरित करती है। नाटक को देखने के बाद यह स्पष्ट महसूस हुआ कि इंदौर की सानंद नाट्य स्पर्धा में अभिनय , नेपथ्य,संगीत, निर्देशन सभी में इसे प्रथम पुरस्कार मिलना बिल्कुल बनता था। कुल मिलाकर मराठी साहित्य संघ के बैनरतले नाटक की दो शामें बहुत खुशनुमा और यादगार रहीं।

महाराष्ट्र चुनाव में महायुति की जीत का अहिल्याजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर मनाया जश्न

विजयवर्गीय बोले -पवार ने राउत को शिवसेना में प्लांट किया, कार्यकर्ताओं की इच्छा फडणवीस सीएम बने

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के राजवाडा में मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महायुति की जीत का अहिल्या प्रतिमा पर माल्यार्पण कर जश्न मनाया। विजयवर्गीय ने बीजेपी कार्यकर्ताओं को जलेबी भी खिलाई। इस दौरान मंत्री विजयवर्गीय ने कहा की संजय राऊत अपना फस्ट्रेशन बयान के जरिए निकाल रहे है। उद्धव ठाकरे को यह बात दिमाग से निकाल देना चाहिए कि राऊत उनके आदमी है। राउत को शिवसेना में पूरी तरह शरद पवार ने प्लांट किया है। महाराष्ट्र में शिवसेना की हार का बहुत बड़ा कारण राऊत है। उद्धव ठाकरे में कोई योग्यता नहीं है। वे सिर्फ बाला साहेब ठाकरे की बिगड़ैल औलाद है।

मंत्री विजयवर्गीय ने कहा की, मुख्यमंत्री का चयन पार्टी नेतृत्व और गठबंधन वाले तीनों दल के नेता करेंगे। मगर महाराष्ट्र के पार्टी कार्यकर्ताओं की इच्छा है कि देवेंद्र फडणवीस को मुख्यमंत्री बनाया जाए। महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन को मिली सफलता और कांग्रेस की ओर से लगाए जा रहे आरोपों का जिक्र करते हुए विजयवर्गीय ने कहा कि- जब कांग्रेस जीत जाती है तो सब ठीक है और जब हार मिलती है तो ईवीएम को दोषी ठहराया जाता है। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने तो पहले ही ईवीएम को लेकर कह दिया था कि उन्हें किसी ईवीएम वाले ने बताया है कि भाजपा जीत रही है। जब हारते हैं तो कपड़े फाड़ते हैं। विजयवर्गीय ने कहा कि अगर महाराष्ट्र में बीजेपी ईवीएम के कारण जीत रही तो झारखंड में क्यों नहीं जीती। प्रजातंत्र में हार और जीत को स्वीकारने का साहस होना चाहिए। बड़ा दिल होना चाहिए, लेकिन यह बड़ा दिल इन नेताओं के पास नहीं है। भाजपा की बड़ी जीत के वजह के सवाल पर विजयवर्गीय ने कहा कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व, भाजपा की विचारधारा और जो हमने कहा, वह किया उसका विश्वास है। महायुति गठबंधन ने बहुत मेहनत की और सहयोगियों ने एक-दूसरे का साथ दिया। नितिन गडकरी और देवेंद्र फडनवीस के नेतृत्व में खूब काम हुआ। पार्टी के कार्यकर्ता ने हमारी विचारधारा को जन-जन तक पहुंचा।

विजयवर्गीय ने बीजेपी कार्यकर्ताओं को जलेबी भी खिलाई

राउत पर बोले विजयवर्गीय

संजय राऊत के गड़बड़ी की आशंका के बयान पर विजयवर्गीय ने कहा कि, राऊत अपना फस्ट्रेशन बयान के जरिए बाहर निकाल रहे है। उद्धव ठाकरे को यह बात दिमाग से निकाल देना चाहिए कि राऊत उनके आदमी है। शरद पंवार को मैं दाद दूंगा कि वे बड़ी चालाकी से अपने आदमी को दूसरे दल में प्लांट करते है। राउत को शिवसेना में पूरी तरह पंवार ने प्लांट किया है। महाराष्ट्र में शिवसेना की हार का बहुत बड़ा कारण संजय राऊत है। शरद पंवार और उद्धव का बेमेल गठबंधन है। उद्धव ठाकरे में कोई योग्यता नहीं है। वे सिर्फ बाला साहेब ठाकरे की बिगड़ैल औलाद है।

महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं की मंशा, फडणवीस मुख्यमंत्री बने

महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री कौन हो, इस सवाल के जवाब में विजयवर्गीय ने कहा कि यह फैसला तो हमारा हाईकमान और तीनों दलों के नेता करेंगे, पर कार्यकर्ताओं की मंशा है कि देवेंद्र फडणवीस मुख्यमंत्री बने। महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं से जो बात हुई है, उसमें उन्होंने अपनी मंशा जाहिर की है। सभी एकमत है कि देवेंद्र फडणवीस को महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बनना चाहिए। बता दें कि कैलाश विजयवर्गी भी महाराष्ट्र में विधानसभा का चुनाव प्रचार करने गए थे और उनके पास भी बड़ी जिम्मेदारी थी। जिन स्थानों पर उन्होंने प्रचार की कमान संभाली उन इलाकों में पार्टी को बड़ी सफलता मिली है।

खोटा सिक्का बार-बार नहीं चलता

विजयवर्गीय ने कहा कि महाराष्ट्र के कार्यकर्तागणों ने जीवटता से काम किया। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों के गलत नरेटिव बनाया था, लेकिन महाराष्ट्र की जनता को समझ में आ गया कि खोटा सिक्का बार-बार नहीं चलता। हमेशा दमदार सिक्का ही खनकता है। भाजपा की नीति, विचारधारा और मोदी के नेतृत्व पर महाराष्ट्र की जनता ने विश्वास जताया।

झारखंड चुनाव को लेकर बोले विजयवर्गीय- विजयवर्गीय ने कहा कि झारखंड चुनाव को लेकर मेरी शिवराज सिंह चौहान से बात होती थी। चुनाव में कहां कमी रह गई। इसका विश्लेषण किया जाएगा। लगता है कि वहां सहानुभूति का नारा काम कर गया। जेल के बदले वोट का नारा वहां चल रहा था। झारखंड में और कोई वजह नहीं थी कि भाजपा की सरकार न बने। विजयवर्गीय ने कहा कि विदर्भ में 62 सीट थी। उसमें से 55 में भाजपा गठबंधन आगे है। सबसे बड़ी जीत विदर्भ की है।

इंदौर में एमबीए स्टूडेंट ने किया सुसाइड

पिता की खजराना गणेश मंदिर में लड्डू की दुकान,परिजन बोले किसी से विवाद नहीं हुआ

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक एमबीए स्टूडेंट ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सबसे पहले मां ने उसे फंदे पर लटके देखा। उन्होंने

घर के सभी सदस्यों को बुलाया और बेटे का शव नीचे उतार कर एमवाय अस्पताल ले गए। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। खजराना पुलिस के अनुसार मृतक का नाम कार्तिक (20) पिता नरेंद्र (नंदू) पाटीदार, निवासी गणेश पुरी कॉलोनी है। उसने शुक्रवार देर रात फांसी लगा ली। परिवार में उसकी मां को इसकी जानकारी सबसे पहले शनिवार सुबह 6 बजे लगी। पिता नंदू पाटीदार की खजराना गणेश मंदिर परिसर में लड्डुओं की दुकान है। परिजनों के मुताबिक कार्तिक भी पिता के साथ दुकान संभालता था। उसने फांसी क्यों लगाई, इसकी वजह सामने नहीं आई है। उसके पास से या घर से कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला है। उसके परिवार में माता-पिता के साथ एक बहन भी है। कार्तिक के अंकल सतीश पाटीदार ने बताया कि परिवार के सभी सदस्य शादी में गए हुए थे। तब घर पर कोई नहीं था। खुद को अकेला देखकर ही कार्तिक ने फांसी लगा ली। पैसों की तंगी और विवाद जैसी कोई वजह अब तक सामने नहीं आई है। कार्तिक खुद भी लड्डुओं की दुकान लगाने के साथ एमबीए की पढ़ाई भी कर रहा था।

इंदौर में सोशल मीडिया पर दोस्ती फिर रेप

महिला का तलाक करवाया, लिव इन में रखा, शादी के नाम पर दी जान से मारने की धमकी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में सोशल मीडिया पर दोस्ती, रेप और जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। पीड़िता ने शुक्रवार रात खजराना थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। बताया जा रहा है कि

महिला की 5 साल पहले शादी हो चुकी है और एक बेटा भी है। आरोपी ने पति से उसका तलाक करवाने के बाद उसे लिव इन में रखा। शादी का दबाव बनाने पर मारपीट की। पुलिस ने बताया कि इंस्टाग्राम पर आरोपी आवेश पुत्र महबूब शेख और पीड़िता के बीच दोस्ती हुई। कुछ दिनों बाद वेलेंटाइन डे पर आरोपी महिला से मिलने घर आया। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि आवेश ने कहा कि वह मुझसे प्यार करता है। इसके बाद दोनों ने संबंध बनाए। बाद में आवेश ने पति को बताया कि वह मुझसे प्यार करता है और शादी करना चाहता है। तुम इसे तलाक दे दो। इसके चलते पति ने उसे तलाक देकर दूरी बना ली और बेटे को भी अपने पास रख लिया। फिर आरोपी ने अलग कमरा लेकर पीड़िता को अपने साथ लिव इन में रखा। लेकिन शादी नहीं की। पीड़िता ने कहा कि, जब भी मैं आवेश से शादी की बात करती तो वह मुझे टाल देता। शुक्रवार 22 नवंबर की रात को भी उसने मारपीट करते हुए शादी से इनकार कर दिया। मुझे जान से मारने की धमकी भी दी। परेशान होकर उसने आवेश के खिलाफ खजराना थाने में एफआईआर दर्ज करा दी। पुलिस ने बताया कि आवेश की तलाश की जा रही है।

इंदौर में महिला ने जहर खाया,बेटा बोला-इलाज के पैसे नहीं

सूदखोर ने मां के नाम पर एसी-मोबाइल तक फाइनेंस कराया, 15 प्रतिशत ब्याज मांगा, बंधक बनाया

इंदौर (एजेंसी)। नीलेश ने मेरी मां और मुझे अपने ही घर में दो दिन तक बंधक बनाकर रखा। हमें चाकू की नोक पर धमकाया। 2

लाख रुपए के बदले 15 प्रतिशत ब्याज मांगा, 80 हजार रुपए का मोबाइल, एसी-आरओ भी मां के नाम से फाइनेंस करा लिया। वह हमारे घर की रजिस्ट्री भी अपने नाम कराना चाह रहा था। इंदौर में 15 प्रतिशत ब्याज मांगने वाले सूदखोरों से परेशान होकर जहर खाने वाली महिला की हालत गंभीर बनी हुई है। बेटे ने कहा कि मेरी मां आईसीयू में जिंदगी और मौत से संघर्ष कर रही है। मेरे पास अस्पताल को देने के लिए पैसे भी नहीं हैं। द्वारकापुरी के अहीर खेडी निवासी महिला सुनंदा पति देवकुमार पाटिल ने सूदखोरों से परेशान होकर बुधवार रात जहर खा लिया था। बेटे विवेक (17) ने नीलेश सिलावट पर कहा कि दो दिन से एसीपी ऑफिस के चक्कर काट रहा हूं।

इंदौर में दिन के तापमान में मामूली इजाफा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में नवंबर के तीसरे हफ्ते में ठंड का असर बना हुआ है। हालांकि पिछले 24 घंटों में दिन के तापमान में मामूली इजाफा हुआ लेकिन ठंडक बनी हुई है। रात में काफी ठंडक रही। मौसम वैज्ञानिकों ने एक-दो दिन में तापमान में और गिरावट के आसार जताए हैं। इन दिनों दोपहर में भी ठंडापन है और ऊनी कपड़ों की जरूरत महसूस होने लगी हैं। 30 नवंबर तक जरूर रात में कंपकंपा देने वाली ठंड पड़ने लगेगी। इस दौरान तापमान 10-11 डिग्री तक पहुंचने के आसार हैं। नवंबर का पिछले 10 सालों का रिकॉर्ड रहा है कि न्यूनतम तापमान 10-11 डिग्री तक गया हैं। गुरुवार को दिन का तापमान 26.7 (-3) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। शुक्रवार को इसमें मामूली इजाफा हुआ था और 27.2 (-2) रिकार्ड किया गया।

इंदौर में दुल्हन और प्रेमिका में मारपीट, बाल नोंचे-चोटी खींची

सीएम कन्यादान योजना के समारोह में हंगामा, दूल्हे ने प्रेमिका को पीटा

इंदौर(एजेंसी)। इंदौर में शुक्रवार को मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के शादी समारोह में हंगामा मचाने वाली कथित प्रेमिका और दुल्हन के बीच मारपीट का वीडियो शनिवार को सामने आया है। दोनों ने शादी के मंडप में एक-दूसरे की पिटाई कर दी। चोटी खींची और पटक-पटककर मारा। वीडियो में दिख रहा है कि दुल्हन के साथ आई एक महिला ने भी प्रेमिका की जमकर पिटाई कर दी। प्रेमिका जब देख लेने की धमकी देकर जा रही थी तो दूल्हे ने भी मारपीट की। मामले में दुल्हन ने थाने पहुंचकर आरोपी प्रेमिका के खिलाफ शिकायत कर दी है।

युवती और दूल्हा एक ही कॉलोनी के रहने वाले- बताया जा रहा कि युवती और दूल्हा नीलेश यादव एक ही कॉलोनी में रहते हैं। नीलेश 2008 में हुए एक मर्डर के मामले में आरोपी रह चुका है। उसने अपने भाई संजय के साथ मिलकर बेसबॉल बैट से हत्या कर दी थी। मृतक इंदौर के नजदीक गांव में रहता था। पुलिस ने नीलेश के खिलाफ सबूत जुटाकर उसे जेल भेज दिया था। जेल से छूटने के बाद नीलेश यादव वीडियो और फोटो शूटिंग का कामकाज करता है। प्रेमिका और दुल्हन दोनों ने एक-दूसरे को जमकर पीटा। उन्हें एक-दूसरे से हटाने के लिए दूल्हा और उसके परिजन भी पहुंच गए। इनमें से कुछ महिलाओं ने प्रेमिका की पिटाई कर दी। दुल्हन-प्रेमिका के बीच विवाद खत्म होने के बाद दूल्हा-दुल्हन के साथ जा रहा था। प्रेमिका ने उसे देख लेने की धमकी दी। इससे गुस्साए दूल्हे ने प्रेमिका की पिटाई कर दी।

हंगामा करने वाली युवती ने खुद को प्रेमिका बताया- एसआई विजय धुर्वे ने बताया कि शहर के मल्हारगंज क्षेत्र के दलाल बाग में मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत विवाह समारोह आयोजित किया गया था। इसमें एक जोड़ा अपने परिवार की रजामंदी से शादी कर रहा था। इसी दौरान गुस्से में एक युवती वहां पहुंची और दुल्हन के साथ मारपीट करते हुए शादी का विरोध करने लगी। युवती के हंगामे के बाद दुल्हन सपना चौहान (निवासी महू) मंडप से उठकर सीधे मल्हारगंज थाने पहुंच गई और लिखित शिकायत दर्ज कराई। दुल्हन का कहना है कि मारपीट करने वाली युवती दूल्हे की प्रेमिका है, जो कि दूल्हे के ही दोस्त की पत्नी है।

इंदौर में होटल शेरेटन के रेस्टोरेंट मैनेजर की मौत

रात 3 बजे बिजली के पोल में घुसी कार, दो घंटे बाद पहुंची एम्बुलेंस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात 3 बजे एक कार बिजली के पोल से टकरा गई। हादसे में होटल शेरेटन के रेस्टोरेंट मैनेजर की मौत हो गई। वे होटल से घर लौट रहे थे। हादसा एमआर-11 पर हुआ। उन्हें सिर और शरीर के अन्य हिस्सों पर गंभीर चोट आई थी। पुलिस ने मृतक की जेब में मिले आईडी कार्ड से पहचान कर होटल स्टाफ को सूचना देकर मौके पर बुलाया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार हादसे के दो घंटे बाद एम्बुलेंस मौके पर पहुंची। मृतक का नाम मनीष (36) पुत्र रवींद्र है। पुलिस ने शेरेटन होटल के स्टाफ को मौके पर बुलाया। स्टाफ ने मृतक की पहचान रेस्टोरेंट मैनेजर के रूप में की। स्टाफ ने बताया कि मनीष बायपास स्थित होटल से देर रात घर जाने के लिए निकले थे।

इवेंट पार्टी के चलते देर रात तक रुके थे- होटल में एक इवेंट पार्टी थी। इसलिए मनीष होटल बंद होने तक वहीं रुके रहे। रात करीब 2.30 बजे से वे होटल से निकले। इस दौरान वे होटल गोल्डन लीव्स के नजदीक पहुंचे। यहां उनकी कार असंतुलित होकर बिजली के खंभे से टकरा गई। स्टाफ के मुताबिक उन्होंने 7 महीने पहले ही होटल जॉइन किया था। परिवार में एक बेटा और पत्नी है। मनीष मूल रूप से बिहार के छपरा के रहने वाले थे।

सड़क हादसे में दो भाइयों की मौत

इंदौर पितृ पर्वत पर हुआ एक्सीडेंट, सीसीटीवी खंगाल रही पुलिस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में पितृ पर्वत के पास शुक्रवार देर रात हादसे में दो भाइयों की मौत हो गई। वे दोनों शादी समारोह से इंदौर लौट रहे थे। पितृ

पर्वत के नजदीक भैरव मंदिर के पास उन्हें ट्रक ने टक्कर मार दी थी। पुलिस के अनुसार मृतकों के नाम राहुल पिता मुकेश डाबी (35) निवासी ग्राम सोनगिर हातोद और उसका भाई विनोद डाबी हैं। पुलिस ने बताया कि घटना स्थल के आसपास अंधेरा है। वे वाहन की टक्कर से दूर जा गिरे। डायल 100 पर राहगीर की सूचना मिलने पर गांधी नगर पुलिस मौके पर पहुंची। जिसके बाद दोनों को अरविंदो अस्पताल भेजा गया, यहां डॉक्टरों ने अधिक खून बह जाने के कारण मौत की पुष्टि की। पुलिस के मुताबिक मर्ग कायम कर घटना के समय और आसपास के सीसीटीवी कैमरों से अज्ञात वाहन का पता लगाया जा रहा है।

बाइक सवार की मौत में डंपर चालक पर केस- बाण गंगा पुलिस ने पिछले दिनों हुई बाइक सवार युवक की मौत के मामले में शुक्रवार रात डंपर चालक पर केस दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार 20 नवंबर की दोपहर को मृतक मनीष पिता राय सिंह मौर्य (29) निवासी बिचौली हप्सी अपनी बाइक एमपी 09 एक्सई 4741 पर देपालपुर से बिचौली हप्सी जा रहा था। वह जैसे ही लवकुश चौराहे पर पहुंचा तो पीछे से आ रहे डंपर एमपी09एचएच6382 के चालक ने गाड़ी को तेज व लापरवाही पूर्वक चलाते हुए पीछे से टक्कर मार दी थी। दुर्घटना में बाइक सहित गिरकर मनीष की मौत हो गई थी।

यूरेशियन ग्रुप बैठक में आएंगे 112 डेलीगेट्स

मनी लॉन्ड्रिंग-टेरर फंडिंग पर होगी चर्चा, राजबाडा, छप्पन, सराफा चौपाटी जाएंगे मेहमान

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में 25 से 29 नवम्बर तक होने वाली यूरेशियन समूह (एईजी) और वर्किंग ग्रुप की बैठक के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। इसके साथ शुक्रवार से मेहमानों के आने का सिलसिला भी शुरू हो गया था। शनिवार शाम 4 बजे से 7 बजे तक एयरपोर्ट पर बड़े डेलीगेशन्स आने की संभावना थी। इसमें 100 से ज्यादा सदस्य रहेंगे। सबसे बड़ा प्रतिनिधिमंडल रशियन फेडरेशन का होगा। इसमें रूस सहित 9 सदस्य देशों के ऑब्जर्वर देशों के प्रतिनिधि, वित्तीय और सुरक्षा संस्थानों के प्रमुख हिस्सा लेंगे। सदस्यों की आवाजाही और स्वागत के लिए एयरपोर्ट पर विशेष व्यवस्था की गई है। एयरपोर्ट पर वाद्य यंत्रों के कलाकारों द्वारा मधुर धुन पर मेहमानों का स्वागत किया जा रहा है।

मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकवाद फंडिंग पर होगी चर्चा- यह बैठक मुख्य रूप से मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकवाद को फंडिंग के खिलाफ रणनीति बनाने के उद्देश्य से हो रही है। इस महत्वपूर्ण आयोजन में 28 नवम्बर को प्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल, कई केन्द्रीय मंत्रियों सहित प्रदेश के मंत्री और अन्य जनप्रतिनिधि भी शामिल होंगे।

शहनाई की धुन पर हो रहा सत्कार

अतिथियों का सत्कार तिलक लगाकर, पुष्पाहार पहनाकर किया जा रहा है। स्वागत शहनाई की मंगल ध्वनि के साथ किया जा रहा है। अतिथियों के आगमन के समय प्रदेश की सांस्कृतिक झलक भी प्रस्तुत की जा रही है। सभी अतिथियों के लिए शहर के विभिन्न होटल में आवास व्यवस्था की गई है। यहां पर उनके लिए मनी एक्सचेंज काउंटर भी बनाए गए हैं। सहयोग के लिए लाइजनिंग अधिकारी भी बनाए गए हैं। पांच दिनों तक ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में आयोजित होने वाली बैठक में भाग लेने के लिए केंद्र से करीब 50 वरिष्ठ अधिकारियों के इंदौर पहुंचने की उम्मीद है। बैठक में 350 की संख्या तक मेहमान शामिल हो सकते हैं।। इस लिहाज से सारी व्यवस्था की गई है।

एयरपोर्ट पर डेलीगेट्स की सहायता के लिए विभिन्न कॉलेजों से 200 वॉलियंटर्स की एक टीम तैयार की गई है। अतिथि राजबाडा, लालबाग सहित ऐतिहासिक महत्व के अन्य पर्यटन स्थलों के साथ 56 दुकान, सराफा चौपाटी आदि स्थानों पर भी जाएंगे। इसके अलावा उनका मांडू किला और डेली कॉलेज का दौरा भी तय किया गया है।

इंडियन नेवी के लिए इंदौर में बनी स्पेशल रोप

हजारों टन के जहाज को बांधने में सक्षम,70 किलो की रस्सी उठाती है 160 टन वजन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की एक कंपनी इंडियन नेवी के लिए स्पेशल रोप (रस्सियां) की मैन्युफैक्चरिंग कर रही है। इसके लिए अमेरिकन फाइबर का इस्तेमाल किया जा रहा है। कंपनी ने इंटरनेशनल पैरामीटर के आधार पर पतली और हल्की रोप बनाई हैं। यह रस्सियां अपने से कई सौ गुना भारी भरकम वजन उठाने में सक्षम हैं। हाई-डेंसिटी पॉली एथिलिन (एचएमपीई) से बनी 50 मीटर की एक रस्सी का वजन महज 70 किलो है। यह रस्सी 160 टन वजनी सामान उठा लेती है। ऐसी कई रस्सियां मिलकर टनों वजनी जहाज को बांधे रखती हैं। एक और खास तरह की पतली और हल्की रस्सी भी बनाई गई है, जो ड्रोन से पहाड़ी या खाई की दूसरी ओर भेजी जाती है। जब यह बंध जाती है, तो उससे 25 टन वजनी सामान भेजा जा सकता है।रस्सियां बनाने के लिए अमेरिका से मंगवाया जाता है स्पेशल फाइबर। पीथमपुर स्थित टफरोप्स प्रा. कंपनी 30 सालों से डिफेंस सेक्टर में काम कर रही है। दो साल से कंपनी नए नाम टफरोप्स कॉर्टलैंड के नाम से संचालित की जा रही है। कंपनी ने गुरुवार को इंदौर में आयोजित रीजनल डिफेंस एमएसएमआई कॉन्क्लेव में रक्षा उत्पादन, रक्षा मंत्रालय, एमपीआईडीसी, सीआईआई आदि के अधिकारियों, एक्सपर्ट्स को इन रस्सियों की क्षमताओं और उपयोग के बारे में बताया।

रस्सियों के लिए स्पेशल तरह का फाइबर- टफरोप्स कॉर्टलैंड कंपनी की पेरेंट कंपनी अमेरिका की कॉर्टलैंड इंटरनेशनल कंपनी है। यह वहां डिफेंस सेक्टर के लिए ऐसी रोप तैयार करती हैं। टफरोप के वैभव गणेश (प्रोडक्ट मैनेजर) ने बताया कि, इंदौर कोकॉर्टलैंड का इंटरनेशनल अनुभव मिल रहा है। इंदौर की कंपनी ने इंडियन नेवी के लिए ऐसी रस्सी बनाई है, जो स्टील जैसी मजबूत है। इसका इस्तेमाल बड़े जहाजों को एंकर करने के लिए कर सकते हैं। कंपनी स्पेशल तरीके का फाइबर बनाती है, जो डिफेंस सेक्टर में कई इक्विपमेंट बनाने में यूज होता है। इससे पहले कंपनी नेवी के लिए 120 मिमी की फाइबर (पोली-प्रोपेलिन) की रस्सी बनाती थी। यह जहाज को बांधने के लिए होती है। इसमें पहले हैवी फाइबर यूज करना पड़ता था। अब उसके स्थान पर बिल्कुल पतला और हल्का फाइबर यूज होता है। इसे प्लाज्मा एचएमपी कहते हैं। यह इंदौर में बनता है। इसका इस्तेमाल नेवी के मझगांव डॉक (कंपनी) सहित सैन्य क्षेत्र के कई अन्य साजो-सामान बनाने में किया जाता है।

सुरक्षा और विश्वसनीयता के कारण नेवी में ज्यादा इस्तेमाल- दरअसल पहले 120 मिमी की 50 मीटर रस्सी का वजन 450 किलो होता था और यह 160 टन वजन उठाती थी। अब 48 मिमी वाली 50 मीटर लम्बी रस्सी का वजन सिर्फ 70 किलो है।

जयंती: डॉ हरिवंश राय बच्चन

दिनेश पाठक

पिता के कुछ पत्र जो पुत्र के नाम लिखे गए !

ग्वालियर निवासी 90 वर्षीय वयोवृद्ध साहित्यकार शैवाल सत्यार्थी और महाकवि डॉ.हरिवंश राय बच्चन के बीच धर्म पिता और धर्म पुत्र का रिश्ता था, जिसे महाकवि ने अपने पत्रों के ज़रिए जीवनपर्यंत निभाया। यहां तक कि जो हस्ताक्षर वे अपने पुत्रों अमिताभ और अजिताभ को लिखे पत्रों पर करते थे वही हस्ताक्षर शैवाल जी को लिखे पत्र पर करते थे।

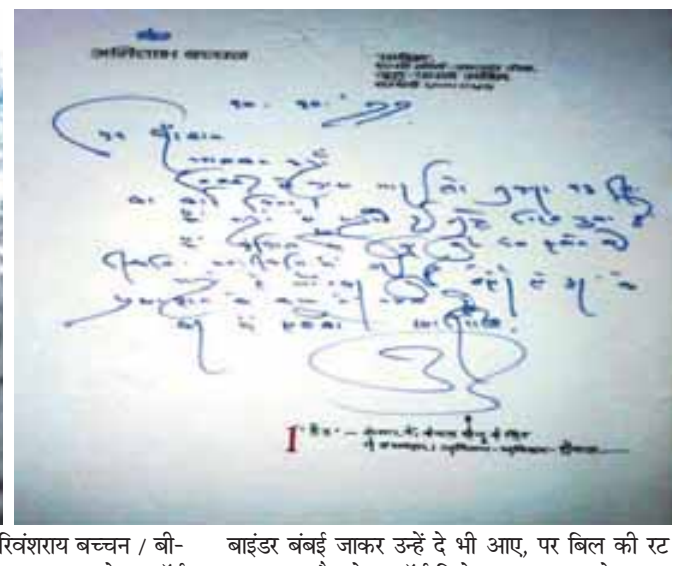

शैवाल सत्यार्थी के पास डॉ हरिवंशराय बच्चन की कलात्मक लिखावट में उन्हें लिखे गए सैकड़ों पत्रों का संग्रह मौजूद है। इन पत्रों में घर, परिवार से लेकर देश, काल, समाज और दर्शन तक की बातें समाहित हैं, बीच बीच में तात्कालिक उत्पन्न कवित्व की झलक भी है। इस आत्मीयता के पीछे की लगभग आधी सदी पुरानी कहानी बताते हुए शैवाल जी कहते हैं कि 3 मार्च 1976 रात्रि के अंतिम प्रहर में एक विशेष स्वप्न देखा, कहते हैं कि सुबह का सपना सच होता है। स्वप्न में जो देखा उसके आधार पर तुरंत महाकवि हरिवंश राय बच्चन (जिनसे पहले भी मेरा पत्राचार हो चुका था) को पत्र लिखने बैठ गया। पत्र पूर्ण कर, डॉ हरिवंश राय बच्चन द्वारा अमिताभ बच्चन, प्रतीक्षा 14 उत्तर-दक्षिण रास्ता, दसवाँ, जुहू पारले स्कीम, मुंबई के पते पर रवाना कर दिया। 5 अप्रैल 1976 के अपने उत्तर में उन्होंने लिखा तुम्हारा 4 मार्च का पत्र मिला। उसके पूर्व मैं तुम्हारे पिछले पत्र का उत्तर भेज चुका था, मिला होगा।

तुम्हारे शब्दों के पीछे जो भावना है, उसने मुझे छू दिया। फिर भी, मैं तुम्हें अपना धर्म-पुत्र बनाने में असमर्थ हूँ, क्योंकि पिता का कर्तव्य अब मैं पालन नहीं कर सकता रक्षण पालन पुत्र का होता है। पर, तुम मुझे अपना धर्म-पिता मान सकते हो। क्योंकि, पुत्र का कर्तव्य करने को तुम अब भी समर्थ हो यानी पिता की सेवा। तुम कर्तव्य की गंभीरता समझकर अपना निर्णय देना, समय आने पर कुछ सेवा बोलूंगा। वैसे मेरी दृष्टि में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच केवल भाई-भाई या मित्र-मित्र का नाता हो सकता है 'सबका पिता परम पिता' शेष उसकी संतानें भाई-भाई , हमारे तुम्हारे बीच भाई-भाई का नाता क्या बुरा है, जो तुम उसे बदलना चाहो।अवस्था का अंतर देखते होगे। भावना की भी कोई उम्र होती है? नीचे हिंदी के सुपरिचित हस्ताक्षर थे बच्चन। बाल हठ विख्यात है। जब रक्षण-पालन की ही बात आ गई, तो मैं और नन्हा बन गया, अपना निर्णय सुना दिया और उस दिन से ही उन्हें पापा संबोधन दे दिया। शैवाल जी आगे बताते हैं कि अर्से तक मैं उनकी 'उस सेवा' की प्रतीक्षा करता रहा।

फिर एक दिवस एक पत्र में पापा ने पूछा तुम्हारे पास प्रिंटिंग प्रेस है, मेरे लेटर फॉर्म छाप सकोगे? इन 'स्पेसिमेन' सिग्नेचर में जो ठीक लगे उसका ब्लॉक बनवा लेना। लाल स्याही में हस्ताक्षर छापना, उसके ऊपर नीली स्याही में पता -सोपान / हरिवंशराय बच्चन / बी-8, गुलमोहर, पार्क -नई दिल्ली - 49, पर लेटर फॉर्म छापने के लिए एक शर्त रहेगी। साथ में बिल भेजना पड़ेगा। तुम्हें नामंजूर, हो तो, छापने की बात भूल जाओ, मेरा काम, चलेगा ही। शैवाल जी कहते हैं कितनी कठिन, कितनी भयावह ऐसी शर्त से तो मेरे प्राणों पर ही बन आई खैर, लिख दिया कि शर्त मंजूर।

लेटर फॉर्म छप गए, वाइंड हो गए और रफीक मियां बाइंडर बंबई जाकर उन्हें दे भी आए, पर बिल की रट शुरु। पत्र और लेटर फॉर्म मिले। धन्यवाद। इससे अच्छा संतोष ... नीली- लाल स्याही बिल्कुल ठीक। मेरी उंगलियों में दो अंगूठियां हैं नीलम की नीली और मूंगे की लाल। नीली राम का प्रतीक पुरुष और लाल सीता का प्रतीक। प्रकृति सिया-राम मय सब जग जानी अँगूठी-जग ब्रह्माण्ड का प्रतीक। अब सबसे ज़रूरी बात बिल भेजो। दिनांक (16.1.80) प्रिय शैवाल, लेटर पैड मिल गए। कागज़, छपाई, पोस्टेज के रुप में मुझे कितने रुपये भेजने हैं ? शीघ्र सूचित करो। दिनांक (2.2.80)

शैवाल जी सत्यार्थी (प्रिय, चिरंजीवी सब गायब, नाराजगी की पराकाष्ठा।) मेरा पिछला कार्ड मिला होगा, बिल क्यों नहीं भेजा? मैं बहुत नाराज़ हूँ। अगर इस पत्र के उत्तर में तुमने बिल नहीं भेजा, तो आगे से मैं तुम्हारे किसी पत्र का उत्तर नहीं दूंगा और न तुमसे कोई काम कराऊँगा। बिल ऊपर के पते पर भेजो। दिनांक (16.4.84)

एक बार पत्र के अंत में उनके हस्ताक्षरों ने मुझे चौका दिया। उनके विख्यात हस्ताक्षर, जिन्हें धर्मयुग में प्रकाशित एक संस्मरण के अनुसार, अंग्रेजी का गुड पढ़ लिया गया था, किन्तु सदा की भांति इस पत्र पर वे हस्ताक्षर नदारद थे। मैंने पूछा पापा, यह आपने क्या हस्ताक्षर किए हैं? उत्तर मिला यह डैड का शॉर्ट है। अमित-अजित मुझे डैड ही कहते हैं और उनको पत्र लिखते समय ऐसे ही हस्ताक्षर करता हूँ। धर्म-पुत्र की मेरी भावना और अधिक बलवती हो गई। बच्चन जी का जीवन-दर्शन था मनुष्य को मनुष्य के नाते समझना। उसके अहं को इतना व्यापक बनाना इतना उदात्त बनाना कि मनुष्य के लिए कोई त्याग उसे सहज ही अपनी सत्ता की सबसे बड़ी उपलब्धि जान पड़े।

जरा-जीर्ण शरीर
मरण की सहनी पड़ेगी पीर
मानवी गरिमा की
अंतिम साँस तक धर-धीर।

कविता

हिमालय के सान्निध्य में

अनुजीत इकबाल

तुम्हारे मौन में वह गुंजन है
जो समय के पार कहीं ठहर जाती है,
और मैं, अपनी विह्वलता लिए
तुम्हारी परछाईयों के वृत्त में घूमती हूँ
तुम कितने असीम, कितने अपरिचित
पर फिर भी, मेरे हर शब्द,
हर आहट के स्रोत
मेरे अस्तित्व पर तुम्हारे हस्ताक्षर
तुम्हारी चुप्पी में
कोई कथा ठहरी है
जिसे किसी प्राचीन ऋषि ने
अधूरा छोड़ दिया था
किसी प्रतीक्षा का अंत -
या शायद आरंभ
मैं तुमसे प्रश्न करती हूं

और तुम उत्तर नहीं,
बस एक दिशा देते हो
यदि मैं इस प्रश्न-पथ पर भटक जाऊं
यदि मेरी व्यथा के बिंदु मुझे बांध लें
तब तुम्हारी शांत श्वास मुझे पुकारेगी
तुम्हारे सर्द पत्थरों की ऊष्मा
मुझे मेरे भीतर का ताप भुला देगी
हे हिमालय,
तुम्हारे सानिध्य में
वह अनवरत हलचल है
जिसमें अनंत स्थिरता है
मैं वहां सब कुछ खोकर
स्वयं को पुनः रच लूंगी।

पुस्तक इनदिनों

सतीश सिंह

समीक्षक

हिंदी के विकास का लेखा-जोखा करती किताब

बहुतेरे हिंदी प्रेमी और आमजन आज भी हिंदी भाषा की विकास यात्रा से परिचित नहीं हैं। लिहाजा, एक अरसे से एक ऐसी पुस्तक की जरूरत महसूस की जा रही थी, जिसमें हिंदी के विकास की जन्मकुंडली हो। इस दृष्टिकोण से लेखक द्वय केशव राय और अनंत की रचना 'हिंदी की विकास यात्रा' लोगों की अपेक्षा को पूरा करती प्रतीत हो रही है।

इस पुस्तक में कुल 36 अध्याय हैं, जिनमें हिंदी के विकास का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। इस क्रम में दूसरी भारतीय भाषाओं का समीचीन वर्णन, हिंदी साहित्य की उसके कालक्रम जैसे, आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिककाल के अनुरूप विवेचना, हिंदी भाषा में आ रहे बदलावों के बारे में विमर्श, हिंदी भाषा के विकास के मार्ग के रोड़ों की चर्चा, भारतीय शिक्षा के इतिहास आदि को जानने व समझने का प्रयास किया गया है।

लेखक द्वय का मानना है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की कोशिशों में आजादी के बाद ज्यादा तेजी आई, क्योंकि जनमानस की अपेक्षा के अनुरूप स्वतंत्रता के बाद भी हिंदी को राष्ट्रभाषा नहीं बनाया गया और यह महज राजभाषा बनकर रह गई। देश में अँग्रेजी का वर्चस्व बरकरार रहा और यह रोज़गार की भाषा बदस्तूर बनी रही। तथाकथित बुद्धिजीवी अँग्रेजी के मोहपाश से बाहर नहीं निकल सके। फलतः हिंदी लोकभाषा यानी गरीब एवं वंचित तबकों की भाषा बनकर रह गई।

अँग्रेजी हटाओ आंदोलन, दक्षिण के राज्यों में हिंदी विरोध, दक्षिण में हिंदी प्रचार सभा, दक्षिण में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने वाली विभूतियाँ, भारतीय हिंदी परिषद, भारतीय भाषा परिषद, केंद्रीय हिंदी निदेशालय आदि की चर्चा भी पुस्तक में की गई है। इसमें हिंदी के विकास में रंगमंच और फिल्मों की सकारात्मक भूमिका पर भी रोशनी डाली गई है। गैर हिंदी राज्यों में बहुत सारे लोगों ने हिंदी फिल्म देखकर हिंदी बोलना सीखा है। खिचड़ी भाषा या हिंगलिश ने भी हिंदी के वितान को व्यापक बनाने में मदद की है। सोशल मीडिया भी इसे समृद्ध कर रही है।

लचीली और सहज होने के कारण हिंदी का प्रयोग कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल, संचार के विविध माध्यमों आदि क्षेत्रों में सरलता से किया जा रहा है। देश एवं वैश्विक स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता में तेजी आई है। मौजूदा समय में कई देशों की यह एक प्रमुख भाषा है। हिंदी आगे बढ़ रही है और इसका भविष्य बेहद ही उज्ज्वल है। मुझे लगता है कि लेखक द्वय के तर्कों में कोई अतिशयोक्ति भी नहीं है।

पुस्तक हिंदी की विकास यात्रा
लेखक केशव राय और अनंत
प्रकाशक स्टोरीमिरर इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड
मूल्य (सजिल्द) 499 रूपये

लघुकथा

पिता

अविनाश अग्निहोत्री

सुधा ओ सुधा देखो बच्चे कितने अच्छे अच्छे कपड़े ले आए है। कपड़े,पर आप तो खुद के लिए जूते लेने गए थे न। फिर ये बच्चों को कपड़े क्यों दिलवा लाए।
सुधा ने रवि के घिसे हुए जूतों की ओर देखते हुए कहा। हां जा तो मैं इसीलिये रहा था।

पर रास्ते में बच्चों को एक दुकान पर लगे कपड़े बहुत पसंद आ गए सो वो ही ले लिए। और फिर त्यौहार भी तो सर पर है।
बच्चों के कपड़े भी तो लेने ही थे। सो ले लिए,रवि ने उसे समझाते हुए कहा। फिर जूते, सुधा ने फिर प्रश्न किया। हां हां आते हुए चौराहे के मोची से इन जूतों के सोल की भी मजबूत सिलाई करवा ली है।
जिसके बाद मोची ने आश्वासन भी दिया है कि अब आपके ये जूते महीनों खराब नहीं होंगे।
रवि ने सुधा की ओर मुस्कुराकर देखते हुए कहा।तब अनायास ही आज उसे रवि के मुस्कुराते चेहरे में एक पिता नजर आया।

लघुकथा

रमेश रंजन त्रिपाठी

मन का इलाज

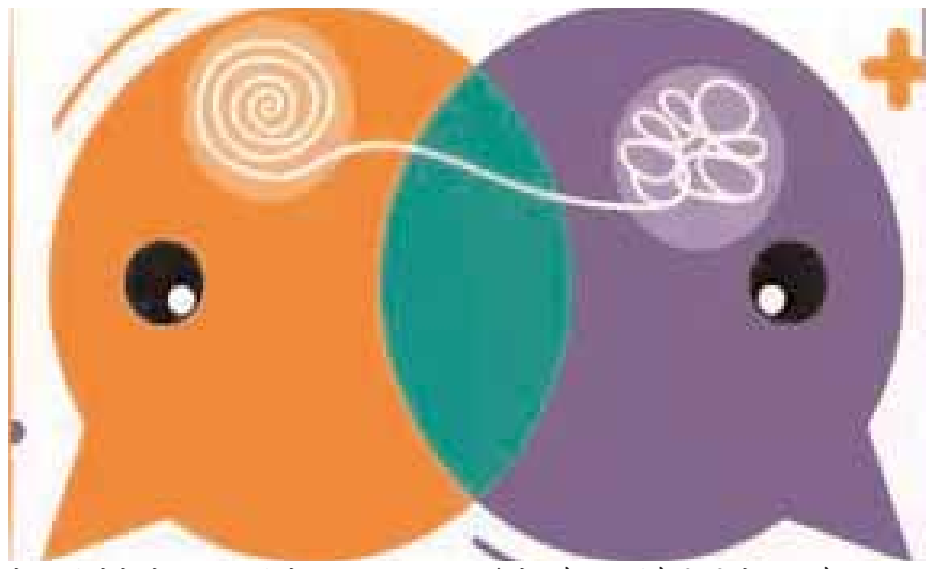

जैसे ही माधव के एक्सीडेंट में मौत हो जाने का समाचार मिला प्रबोध तत्काल अस्पताल की ओर भागा। उसे पता था माधव को सरकारी अस्पताल ले जाया गया था। माधव और प्रबोध बचपन के मित्र थे। दोनों में खूब पटती थी। दोनों ही साधारण आय वाले थे। उनकी घरवालियाँ भी घरों में खाना बनाने का काम करती थीं। किसी तरह वे लोग गुजर-बसर कर लेते थे। माधव जब काम से जा रहा था, एक गाड़ी के नीचे आ गया। जब तक लोग अस्पताल पहुँचाते वह दुनिया को अलविदा कह चुका था।

पता लगाकर प्रबोध पोस्टमार्टम रूम पहुँच गया। उसने वहाँ के इंचार्ज से अनुरोध किया कि माधव का पोस्टमार्टम थोड़ा जल्दी हो जाए तो वे आज ही उसका अंतिम संस्कार कर सकते हैं। रिश्तेदारों को एक दिन कम रुकना होगा और मृतक के परिजनों पर खर्च का बोझ भी कम पड़ेगा। पोस्टमार्टम में जितना ज्यादा समय लगेगा, गरीबी में आटा उतना गीला होता जाएगा।

'यहाँ बहुत भीड़ है', इंचार्ज बोला- 'पोस्टमार्टम आज संभव नहीं है। आप दो सौ की रसीद कटवा लीजिए। फीस है। कल तक पोस्टमार्टम हो जाने की कोशिश करूँगा।'

'रसीद कहाँ बनवाना है?' प्रबोध ने पूछा तो इंचार्ज बोला, 'मुझसे और किससे?' प्रबोध को इंचार्ज का बात को घुमाना-फिराना अच्छा नहीं लगा। वह कुछ बोला नहीं। बोलता भी तो क्या? उसने जेब से पांच सौ का नोट निकालकर दिया। इंचार्ज ने रसीद काटी और दो सौ रुपये वापस कर दिए। प्रबोध को लगा कि इंचार्ज से रुपये वापस करने में भूल हुई है। वह प्रश्नवाचक नजरों से इंचार्ज को देखने लगा। इंचार्ज को शायद उसका इस प्रकार देखना पसंद नहीं आया। वह बोला- 'सामने से हटो, दूसरे को आने दो।'

'आपने सौ रुपये कम लौटाए हैं', प्रबोध वहीं डटा रहा।

'सौ रुपये मेरे लिए हैं।' इंचार्ज के चेहरे पर कोई भाव नहीं थे। यह सुनकर प्रबोध हतप्रभ रह गया। एकाएक उसे समझ में नहीं आया कि कैसी प्रतिक्रिया दे। उसके मन में विचार-शृंखला प्रारंभ हो गई। कैसे लोग हैं, जो मरे हुए व्यक्ति के नाम पर अनुचित पैसे हड़पना चाहते हैं? यूँ तो अवैध कमाई कैसी भी हो, गुनाह है, परंतु एक असमय काल-कवलित हो जानेवाले के संबंधी से उत्कोच की आकांक्षा तो अपराध के साथ पाप की श्रेणी में आएगा। कहते हैं, एक घर डायन भी छोड़ देती है, लेकिन कोई मुर्दे को भी न बख्शे तो? जो बमुश्किल दो वक्त का भोजन जुटाता रहा हो, जिसकी पत्नी विधवा और बच्चे बिना बाप के हो गए हों, परिवार दर-दर भटकने की कगार पर आ गया हो, ऐसी लाश से रिश्वत की चाहत रखना, घोर पाप नहीं तो क्या है? प्रबोध ने किसी तरह अपनी भड़ास को निकलने से रोका और इंचार्ज से बोला- 'आप मुर्दे से भी पैसे चाहते हैं?'

इंचार्ज ने निस्पृह भाव से प्रबोध को देखा। वह ऐसे सवालों और उपदेशों का सामना पहले भी कर चुका था। जवाब दे देकर न केवल सामनेवाले को अपितु वह स्वयं को भी समझा चुका था। उसने सात शब्दों में सात सौ पेज का बयान दे दिया- 'मेरे पास केवल मुर्दे ही आते हैं।'

प्रबोध स्तब्ध सा हो गया। अचानक उसे इंचार्ज पर दया आने लगी क्योंकि इंचार्ज नहीं जानता था कि वह क्या गलत कर रहा है! वह अपनी अनैतिकता को मजबूरी की मासूम बेचारगी के फ्रेम में जड़कर प्रबोध को प्रभावित करना चाहता था। प्रबोध कुछ पलों के लिए ऊहापोह में पड़ गया कि सौ रुपये वापस माँगने के लिए और अड़े या नहीं। पता नहीं प्रबोध के हाव-भाव का अथवा इस संक्षिप्त वार्तालाप का असर हुआ, इंचार्ज ने पचास रुपए लौटाते हुए कहा कि तुम्हें आधी छूट देता हूँ। इंचार्ज की इस हरकत ने प्रबोध को निर्णय पर पहुँचा दिया- 'पूरे सौ रुपये वापस करो, सुधर जाओ और भविष्य में किसी से एक पैसा भी घूस न लेने की कसम खाओ, तो ठीक है वरना मैं सीधे पुलिस के पास जाऊँगा।'

इंचार्ज ने एक पल के लिए प्रबोध को देखा, सौ रुपये लौटाए, कसम खाई और उसे रुकने का इशारा करते हुए भरोसा दिलाया कि वह माधव का पोस्टमार्टम जल्दी कराने की कोशिश करेगा।

प्रबोध को अपनी बात के सही या गलत होने की पूरी समझ नहीं थी, लेकिन किसी को सही राह पर लाने का भाव आत्मसंतुष्टि दे रहा था।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

अजंता के प्रति विद्यार्थियों का प्रेम और कला विद्यालय की यात्रा

उन्नीसवीं सदी में काफी कुछ बदल रहा था। लोग बदलाव के नाम पर तमाम प्रयास कर रहे थे। हालांकि कुछ बदलाव ही था जिसमें वाकई सुधार की आवश्यकता थी, जो वाकई किसी के हित के लिए हो रहा था, जहां से पिछड़ेपन की बू आ रही थी बाकी तो आज की ही तरह बदलाव से ज्यादा उसी बहाने खुद के रहन-सहन और कद को बढ़ाने यानी प्रयास करने वाले अपने खुद के स्तर में बदलाव चाहते थे। जैसा कि पहले ही जिक्र किया जा चुका है कि भारत में कला विद्यालय खुलने लगे थे। मद्रास और कलकत्ता के बाद अब बंबई कला विद्यालय पर चर्चा की बारी है उसी से पूर्व कुछ बात भी जरूरी है।

ब्रिटिश सत्ता जो भारत के तमाम विसंगतियों को सुधारने के बात पर बल दे रही थी वही अपने वहां के मजदूर वर्ग के दयनीय स्थिति सहित और भी कई मुद्दों पर आंख बंद कर लेने में भी माहिर थी। ब्रिटिश ग्रामीण क्षेत्र अपने ही हाल पर थे जबकि शहर तेज रफ्तार से अपनी स्थिति में सुधार कर रहा था। यह वही समय था जब इंग्लैंड में भी तमाम बदलाव की जरूरत थी और वो धीरे-धीरे उसी रास्ते पर आगे बढ़ रहा था। ब्रिटिश शासकों में विस्तारवाद की भूख थी, चालाकी और जरूरत के अनुसार किसी भी स्तर तक उतर जाने की चाह भी फलतः समय के साथ दुनिया भर में उसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया और जहां तक हो सका विस्तारित क्षेत्रों में अपने विचारों को समृद्ध बताकर वहां के लोगों पर थोपा। वहां के लोगों में वहीं के लोगों द्वारा हीनभावना के प्रवृत्ति के प्रति उकसाकर उन्हें मानसिक विपन्नता के एक सीमा तक ले जाकर छोड़ने के बाद उनके सामने विकल्प के रूप में अपनी शिक्षा नीति रख दे रहे थे जो श्रेष्ठता के दंभ में नहाए हुए थे।

मैकाले के नीति पर भी ध्यान रखना होगा जहां उन्होंने खुद के शिक्षा व्यवस्था को उच्च बाकी भारतीय शिक्षा को तुच्छ समझने और लोगों को समझाने पर भी काम किया, जिसमें मैक्समूलर का भी भरपूर सहयोग रहा जिसका भारतीय विद्यार्थियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। संस्कार एवं संस्कृतियों पर गहरा कुठाराघात हुआ। हीनभावना लोगों में प्रबल होती गई। लोग अपने हर क्रिया पर उनके प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगे और उनसे मिले चंद शब्दों को सम्मान मान बैठते रहे। रवि वर्मा को 'पूर्व का राफेल' कहने से आखिर क्या सिद्ध करने की चाहत रही होगी? मैक्समूलर को भारतीय धर्मग्रंथों एवं वेदों का विशद ज्ञाता बताकर अंग्रेज अपने उद्देश्य में सफल होते रहे। जबकि वह था इससे बिल्कुल भिन्न। मैकाले और मैक्समूलर को भारतीय शिक्षा, संस्कार, संस्कृति एवं कला हेतु बहुत अच्छा नहीं माना जा सकता। एकतरफा मानसिकता के साथ किया गया कार्य उनके देशहित तो हो सकता है पर दोनों को खुद के विद्वता पर शंका जरूर होता रहा होगा। उन्हें अपने किए पर खुद ही कभी-कभी अपने ही प्रश्नों से जूझना पड़ता रहा होगा जिसका उत्तर उनके पास नहीं रहता रहा होगा।

खैर इन सभी से परे हैवेल नामक एक ऐसी थाती उस समय भी रही है जिन्हें वाकई कला को समर्पित व्यक्ति कहा जा सकता है जो देश, काल और परिस्थितियों से परे जाकर भारतीय विरासत के प्रति छात्रों को हमेशा जागरूक करते रहे। उनका मानना था कि भारतीय विरासत ब्रिटेन की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध एवं विशद है, और हर भारतीय को उन पर गर्व करने का पूरा अधिकार है। भारतीय कला में भाव, विचार, लयता, वर्णिकाभंग सहित और भी विशेषताओं का इतना विशाल सागर है कि वाकई हर भारतीय को उस पर नाज़ हो। वाकई में हम भारतीय अगर अपने थाती को देखें, समझें तो उनके विशेषताओं पर हमें गर्व होगा। अजंता, एलोरा, खजुराहो सहित और भी प्राचीन एवं नूतन गुफाओं मंदिरों के तरफ देखें

वहां के कलाकृतियों की तरफ देखें तो समृद्धता पर खुश होने को जी करता है बस शर्त ये है कि अपने भारतीयता के नजरिए से देखें ना कि किसी पाश्चात्य विचारों के लिबास को ओढ़कर। रही बात अंग्रेजों के यहां की धरती पर बहुत अधिक विकास करने का मसलन सड़क, रेल की पटरियां, कृषि को भी औद्योगिक रूप में बदलने हेतु तमाम प्रयोग करने का, तो लोगों को लगता रहा कि कितना विकास हुआ जबकि उस विकास से फायदा किसका है जैसे मुद्दों पर शांति ही रही जबकि सच्चाई यह रही है कि इन सभी चीजों से असली फायदा तो इंग्लैंड का ही रहा।

अंग्रेजों ने भारतीय परिस्थितियों का फायदा लेकर व्यापार के जरिए सत्ता तक का सफर किया। किसानों को नकदी फसलें उगाने पर मजबूर किया गया। ये फसलें अंग्रेजी कारखानों हेतु कच्चे माल के रूप में उनके देश भेजी जाती थीं। माल तैयार होने के बाद वापस भारत के बाजारों में ऊंचे दामों पर बिकने हेतु आ जाती थी। कला विद्यालय खुलने के पीछे भी व्यापार ही उद्देश्य था इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता। कृषि के बाद विभिन्न प्रकार के वस्त्रों, विभिन्न पदार्थों पर दस्तकारी, लकड़ी और मिट्टी की कारीगरी, सहित तमाम लोक कलाओं पर भी उन सभी की नजर थी और इनसे कैसे फायदा प्राप्त किया जा सकता है इस पर भी वो लोग लगातार काम करते रहे साथ ही ये सारी चीजें यहां से खत्म ना हो जाए इस हेतु भी कला विद्यालय की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। भारत में कारीगरी का क्षेत्र बहुत ही समृद्ध और व्यापार के मामले में भी सम्पन्न था। विश्व में बढ़ते मशीनीकरण से कला एवं शिल्प के नष्ट हो जाने के खतरे से कला के प्रति समर्पित लोग सकते में थे। जॉन रस्किन जो अपने दौर के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर थे,

कला लेखक के साथ ही कलाकारी में भी हाथ आजमाते रहते थे और जिनके विचारों में प्रकृति कला एवं समाज का समन्वय भी दर्शित है, ने तो कला, कौशल युक्त एक गांव की ही स्थापना कर डाली थी। यहां प्रकृति और प्रकृति के प्रति प्रेम था पर सभी अंग्रेजों में इस चीज की कमी थी।

कला विद्यालय के श्रृंखला में मद्रास एवं कलकत्ता के बाद अगला नंबर बंबई के कला विद्यालय का था। 1857 में शुरू हुए इस विद्यालय को स्थापित करने का श्रेय सर जमशेद जी जीजेभॉय को जाता है। शुरू में कला की कक्षाएं तो चलती रहीं पर ग्रिफिथ के समय गजब का परिवर्तन देखने को यहां मिला। 1878 में इसका नाम सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट कर दिया गया और 90 में यह सरकार के अधीन हो गया। जल्दी ही विद्यार्थियों द्वारा अजंता के भित्तिचित्रों की प्रतिलिपियां बनाई जाने लगी इसी बहाने शिक्षक भी भारतीय थाती से लगातार परिचित होते रहे। ग्रिफिथ का इसमें बहुत योगदान रहा। विद्यार्थियों द्वारा ये कार्य पूरे लगन और निष्ठा से किया गया जिसके बाद अजंता का प्रभाव उनके बाद के कृतियों में भी नजर आने लगा था। मिट्टी के बर्तनों, सहित और भी जगह अजंता की कृतियां नजर आने लगी थी। लॉकवुड किपलिंग के कार्य भी सराहनीय रहे। विद्यालय के इमारत को डिजाइन करने का श्रेय वास्तुकार जॉर्ज ट्विग मोलेसी को है। कला विद्यालय में निरन्तर विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाता रहा पर धीरे-धीरे विद्यार्थियों के कामों में भारतीय तत्वों का समावेश दिखने लगता है। हालांकि एकेडमिक अध्ययन पर ही जोर हर विद्यालय में रहा जो आगे चलकर भी देखने को मिला पर समय के साथ विद्यार्थी जो आगे चलकर स्वतंत्र कलाकार के रूप में कार्य कर रहे थे, अपने कृतियों में बहुत कुछ बदलाव और प्रयोग करते हुए आगे बढ़ रहे थे। इसी समय राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट (1857) भी वजूद में आ चुका था कुछ वर्षों बाद मेयो स्कूल ऑफ आर्ट लाहौर में भी कला विद्यालय खुला समय के साथ ही और भी विद्यालय खुलते गये जिनका जिक्र आगे होगा।(संलग्न चित्र अजंता की कॉपी है जो साभार गूगल से है)।

पुस्तक चर्चा

डॉ. प्रेम भारती

समीक्षक

हृदय गंगे- पुनः अध्यात्म की ओर जाने का संदेश

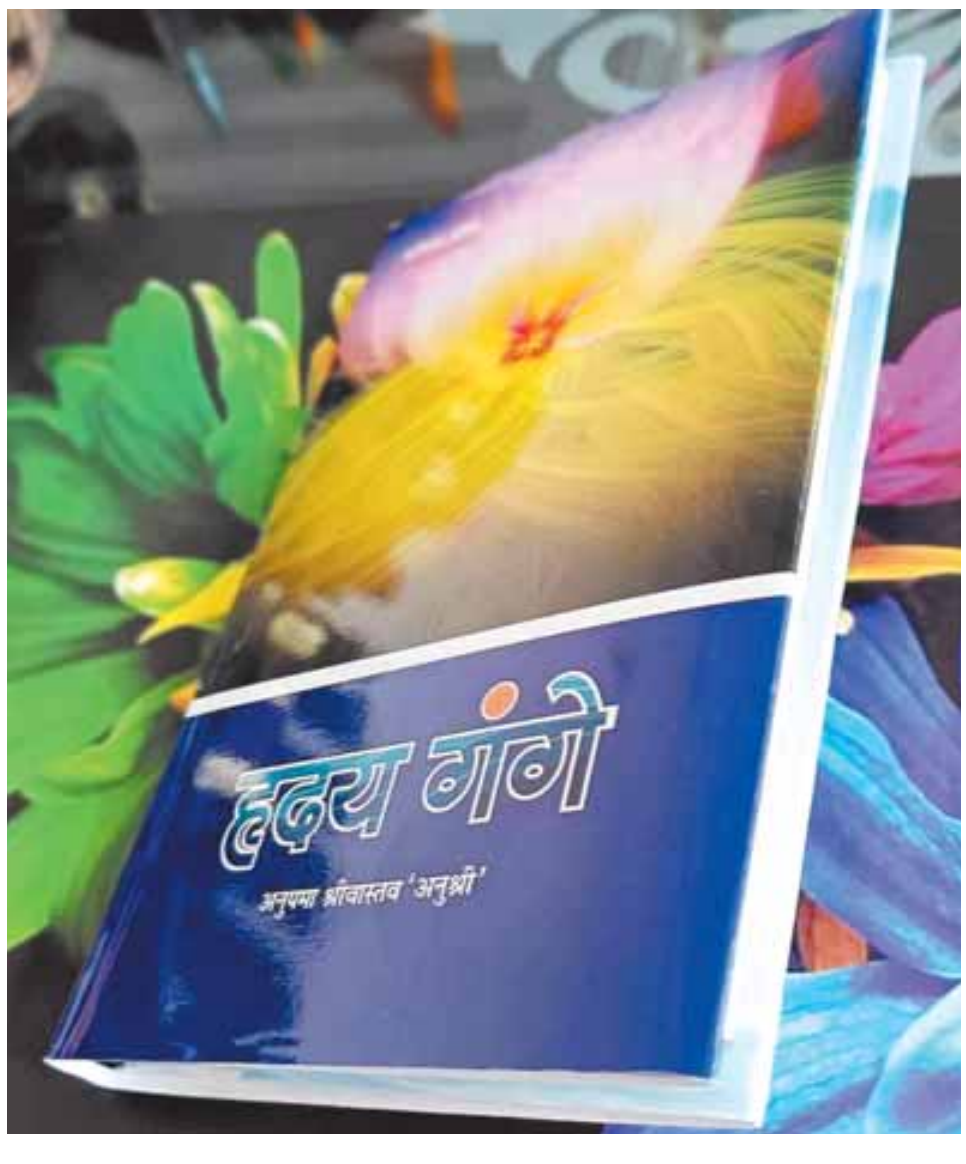

तन प्रदूषित ,मन प्रदूषित,
सृष्टि का कण-कण प्रदूषित।
शेष जीवन में रहा क्या,
हे प्रभो, जो करूँ अर्पित।।

हम जिस जगत में जी रहे हैं ,वह द्वंद्वात्मक है । हमारा जीवन भी द्वंदात्मक है। मनुष्य अनादि काल से अंधकार में प्रकाश खोज रहा है ,लेकिन चेतना की खिड़की नहीं खोल रहा है। केवल स्वाभाविक जीवन जी रहा है। समाधान की खोज एकांगी होती है। समस्या का समाधान बाहर नहीं ,भीतर है। यह समाधान की विपरीत दिशा है। इस दिशा में वही चलता है जिसका अंतःकरण पवित्र हो।

अनुपमा श्रीवास्तव अनुश्री के सद्य प्रकाशित काव्य संकलन को पढ़कर मुझे ऐसा ही लगा कि विचार के परमाणु पुंज समूचे आकाश में फैले हुए हैं यह जब किसी रचनाकार के मस्तिष्क में प्रविष्टि करते हैं ,तो एक नए विचार को जन्म देते हैं। ये विचार मौलिक है या नहीं या जिन्हें हम मौलिक मानते हैं वह सचमुच में मौलिक हैं! हम नहीं कह सकते । इसकी गहराई में हमें नहीं जाना है। किंतु ज्ञात जगत में अज्ञात के प्रति बिंब सदा नया होता है। उसकी स्वीकृति मिलना चाहिए। यही सोच कर मैं इस पुस्तक पर अपने विचार प्रकट कर रहा हूँ।

अनुश्री ने अपनी बात में कुछ नहीं कहा है। सब कुछ पाठकों के हाथों में समर्पित कर दिया है। यह भी इस कृति का मूल हेतु है। अपने विचार पाठक पर थोपने की अपेक्षा वे पाठक को रचना से संवाद स्थापित करने का आग्रह करती हैं। भाव की निष्पत्ति संवाद से होती है और संवाद की निष्पत्ति भाव से। यह क्रम चलना भी चाहिए। पाठक किसी रचना को पढ़े और भाव का विकास न हो तो रचना बेकार है क्योंकि अक्षरों का ग्रहण तो मोबाइल भी कर लेता है ,लेकिन उससे हमारी चेतना का जागरण नहीं होता।

चेतना की जागृति ही बड़ी उपलब्धि है, जिसके द्वारा जीवन की क्रिया संचालित होनी चाहिए।

'हृदय गंग' शीर्षक से रची पंक्तियों में यह भाव प्रकट करते हुए अनुश्री कहती हैं-

गंगा आचमन से पूर्व, हृदय गंगे की पवित्रता सुनिश्चित करें!

मीरा और महादेवी की रचनाओं सी विरह अनुभूति इन रचनाओं में आभासित होती है।

कुछ पंक्तियाँ देखिए-

क्या समीर से सीखा हमने सुरभित करना ,साँस देना!

क्या सरिता से सीखा हमने, सागर की ओर अविरल बहना।

भारतीय चिंतन की यही विशेषता है कि वह समष्टि में ही अपने व्यक्तित्व को विसर्जित करने की कला सिखाता है।

' द्वेताद्वेत 'कविता में नया बिंब विधान भी देखने को मिलता है-

कभी जिंदगी की कढ़ाई में खारा दुख पकता है।

कभी सुख की कलछी मिश्री घोलती है।।

कवयित्री को चिंता है तो केवल आदमकद की , वे कहती हैं-

रे आदमकद! तू हो गया है कितना बौना!

तुझे हर वक्त चाहिए सुख- सुविधाओं का बिछौना ।

इस चिंता का समाधान भी वे इस कविता में प्रस्तुत करती हैं।

किसी से क्या सत्य पूछना है!

किसी से क्या सत्य सुनना है!

जब स्वयं के भीतर बहता

अध्यात्म का पावन झरना है,

जो अनिवार्य ,अमोघ ,अप्रतिम,

शाश्वत अभ्यर्थना है।

यह शाश्वत अभ्यर्थना अब सुनाई नहीं देती क्योंकि-

धर्म दीवारों पर सँवर गया

मंदिर में बस गया

चढ़ावे में चढ़ गया।

तर्क ,वितर्क , कुतर्क,

पुस्तकों का पात्र बन गया

अपरिपक्वों का उपहास बन गया

बनावटी चादर ओढ़कर तन गया

दिखावे और चमक- दमक में रम गया।।÷(प्रपंच का मारा)

मन हुआ वृंदावन, भाव मल्लिका, सुख का सागर , कान्हा तुम्हें समझ पाना , वही अक्षय ऊर्जा , भारत, सीप का मोती , इसी तरह लगभग 78 कविताएँ इस संकलन में है जो कहती हैं कि बौने और सोए हुए को भगवान भी नहीं जगा सकता।

कविता का यही बीज मंत्र है। देश काल बदल रहा है ,हमारी सोच भी बदलना चाहिए। रचनाकार और पाठकों की सोच भी बदलना चाहिए और यह तभी संभव है जब 'हृदय में गंगा ' हो बाहरी गंगा प्रदूषित होती है तो उसे प्रदूषण मुक्त करने के लिए विशाल धन चाहिए। पर हृदय की गंगा प्रदूषित हुई, तो उसे स्वच्छ करने के लिए उत्तम साहित्य चाहिए, जो हृदय को छू सके। ऐसा प्रयास अनुपमा अनुश्री ने किया है। उनकी रचना प्रक्रिया से सशक्त होकर और भी रचनाएँ इस ओर मुड़ें, यही सदिच्छा है।

काव्य संकलन - हृदय गंगे
रचनाकार - अनुपमा श्रीवास्तव अनुश्री
प्रकाशक - बोधि प्रकाशन
प्रकाशन वर्ष - 2024

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)

उत्सुकता के तत्व से भी 'नाम' के लिये भीड़ जुटेगी

टेस्ट क्रिकेट में दो चिर प्रतिद्वंद्वी टीम इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच होने वाले ' एशेज़ ' मुकाबले के बाद भारत और आस्ट्रेलिया टीम के बीच बार्डर गावस्कर ट्रॉफी के मुकाबले भी चर्चित होते हैं । बाईस नवम्बर से आरम्भ होने वाले इस मुकाबले की जितनी व्यग्रता से प्रतीक्षा क्रिकेट प्रेमियों को थी उतनी ही प्रतीक्षा इस तिथि को फिल्म दर्शकों को अजय देवगन की फिल्म ' नाम 'की भी थी क्योंकि यह फिल्म बनने के बीस साल बाद रिलीज़ हुई है । फिल्म की कहानी बीस साल पहले की टाइम लाइन में सेट है जो कि इसके लिए एक बड़ा ड्रॉबैक साबित हो सकती है। फिल्मी दुनिया का यह चलन बरसों पुराना है कि जब भी कोई रुकी हुई पिक्चर रिलीज होती है तो वह अपवादस्वरुप ही कभी-कभी सफल होती है। पर अगर अजय कि यह फिल्म हिट साबित होती है तो इसे चमत्कार ही कहा जायेगा ।

कॉमेडी ,रोमांच और रहस्य की भावनाओं का एक अच्छा तादात्म्य देखकर प्रफुल्लित होने वाले दर्शकों को यह फिल्म ज़रुर देखना चाहिए । यह फिल्म बीस साल पहले ही बनकर तैयार हो गई थी लेकिन कुछ मतभेदों के कारण इसे रिलीज नहीं किया जा सका लेकिन अब अंततः 22 नवंबर को फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज की गई है। किसी फिल्म को बनने से बीस साल बाद रिलीज़ करने का मंतव्य भी साफ है कि प्रोड्यूसर्स फिल्म में लगायें गये अपने पैसों की वापसी चाहते हैं । कहा जा रहा है कि बीस साल पहले बनी फिल्म कैसी है इस उत्सुकता के कारण भी भीड़ जुट सकती है । जब हम यह कह रहे होते हैं तब हमारा आशय यह भी होता ही है कि फिल्म में दर्शकों को खींचने के और भी तत्व है ।

नाम की कहानी एक पेशेवर हत्यारे अमर कुमार उर्फ माइकल की कहानी है ।एक एक्सीडेंट में उसकी यादाश्त चली जाती है. जैसे-जैसे वो अपनी मेमोरी लेन्स में वापस जाता है, मामला बिगड़ने लगता है । यह फिल्मी शैली का मेमोरी लॉस है जिससे मेमोरी लॉस के बाद भी हीरो की एक नई जिन्दगी है । उसने शादी कर ली है, उसके एक बेटी है । वो एक बड़ा बिजनेसमैन है लेकिन उसे अपने पास्ट का अतापता नहीं है । माइकल को कुछ लोग मारने पर तुले हैं । पुलिस भी उसके पीछे है. क्रिमिनल भी उसके पीछे हैं. अमर को इसका अंदाजा ही नहीं कि उसके साथ ऐसा हो क्यों रहा है ?

अजय देवगन को फिल्म में देखकर 'गंगाजल' वाले अजय याद आते हैं. बस फर्क इतना है कि यहाँ वो क्रिमिनल हैं और गंगाजल में पुलिस वाले थे । हालांकि यहां भी वो क्रिमिनल नहीं हैं यह भी बताया गया है ।अजय देवगन को पुराने अंदाज़ में देखकर मजा आता है । वैसे ही टेढ़ी गर्दन करके चलना. एकदम अलग अंदाज में गोली चलाना , ध्यान खींचते हैं ।राजपाल यादव और विजय राज जैसे एक्टर्स भी फिल्म का हिस्सा हैं । राजपाल यादव का वही 'ढोल' और 'भूल भुलैया' टाइप का कैरक्टर है. बेचारे बिना मतलब की मुसीबत में फँसते हैं, पिटते रहते हैं, पर मौज पूरी आती है। भूमिका चावला 'तेरे नाम' की याद दिलाती हैं. उनकी डबडबाई हुई आँखें देखकर उन पर तरस आता है. फिल्म में राहुल देव हैं । अगर आपने सनी देओल वाली 'चैंपियन' देखी हो, तो वैसे ही अवतार में यहाँ भी राहुल हैं । यशपाल शर्मा और समीरा रेड्डी जैसे एक्टर भी फिल्म में हैं. कुल मिलाकर एक्टर्स से जैसी एक्टिंग करवाई गई है, वो उस पर खरे उतरे हैं. कई लोगों की एक्टिंग बनावटी भी है. लेकिन उसमें उनका कोई दोष नहीं, डायरेक्टर का है ।अनीस बज्मी ने इसे अपने हिसाब से अच्छा ही बनाया है।

पुलिस लगातार कर रही फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के प्रयास

4 दिसंबर तक पेश नहीं हुए तो संपत्ति की होगी कुर्की

बैतूल। भाजपा नेता रविंद्र देशमुख सुसाइड केस में फरार चल रहे सारणी क्षेत्र के पूर्व विधायक प्रतिनिधि भाजपा नेता रंजीत सिंह की गिरफ्तारी के लिए कोर्ट ने 22 नवंबर को गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिया है। इस मामले में पुलिस ने आरोपी रंजीत सिंह की प्रॉपर्टी कुर्क करने की कार्रवाई शुरू कर दी है। अगर वह 4 दिसंबर तक पेश नहीं होता है तो उसकी संपत्ति कुर्क कर ली जाएगी। इसी प्रकरण में आरोपी पत्रकार प्रमोद गुप्ता, जो अधिमान्य पत्रकार थे। प्रकरण की गंभीरता और उनके खिलाफ दर्ज आपराधिक मामले को ध्यान में रखते हुए जनसंपर्क कार्यालय भोपाल ने उनकी अधिमान्यता रद्द कर दी गई है। थाना सारणी के टीआई देवकरण डेहरिया ने बताया कि बगडोना निवासी रविंद्र देशमुख की आत्महत्या के मामले में मृतक के सुसाइड नोट में 10 लोगों के नाम दर्ज थे। इस मामले में एसपी निश्चल एन. झारिया के निर्देशन में विशेष अनुसंधान दल (एसआईटी) द्वारा अब तक 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। शेष 4 फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस लगातार प्रयास कर रही है। फरार आरोपियों पर घोषित इनाम की राशि बढ़ाकर 5 हजार कर दी गई है। गौरतलब रहे कि रंजीत सिंह सहित कुल चार लोग घटना के बाद से फरार है। वह अपनी उपस्थिति लगातार छुपा रहे है।

4 तक कोर्ट में पेश नहीं तो संपत्ति होगी कुर्क- टीआई देवकरण डेहरिया द्वारा उसकी चल-अचल संपत्ति की कुर्की की प्रक्रिया शुरू की गई है। 22 नवंबर को कोर्ट से आरोपी रंजीत सिंह के खिलाफ धारा 84 बीएनएसएस के तहत गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया है। कोर्ट ने आरोपी को 4 दिसंबर तक पेश होने का निर्देश दिया है। अगर वह तय समय पर उपस्थित नहीं होता है तो न्यायालय के आदेश का उल्लंघन मानते हुए उसकी संपत्तियों की कुर्की की जाएगी। गौरतलब रहे कि विशेष अनुसंधान दल (एसआईटी) ने विवेचना के दौरान प्रभावी कार्रवाई करते 6 आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। इस मामले के शेष 4 आरोपी अभी भी फरार चल रहे है।

यह है पूरा मामला- भाजपा नेता रविंद्र देशमुख ने 7 अक्टूबर को आत्महत्या कर ली थी। उनके सुसाइड नोट में कुछ लोगों को आत्महत्या के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था। इन लोगों पर मृतक को पैसों की मांग के लिए मानसिक रूप से प्रताड़ित करने और उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा को धूमिल करने की धमकी देने का आरोप है। सुसाइड नोट में आरोपी रंजीत सिंह, प्रकाश शिवहरे, दीपक शिवहरे, प्रमोद गुप्ता, अभिषेक साहू, मोहम्मद नसीम रजा, शमीम रजा, नाजिया बानो, करण सूर्यवंशी और भोला सिंह उर्फ रामनारायण सिंह के नाम शामिल थे। एसपी निश्चल एन. झारिया ने इस मामले में आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी के लिए विशेष अनुसंधान दल (एसआईटी) का गठन किया है। आरोपियों की धरपकड़ के लिए विभिन्न राज्यों में पुलिस टीमों को भेजा गया। साथ ही फरार आरोपियों की गिरफ्तारी पर 5 हजार का इनाम भी घोषित किया गया है।

रंजीत व प्रकाश हुए पार्टी से निष्कासित

बैतूल भाजपा जिला कार्यालय से जारी विज्ञप्ति के अनुसार सारनी नगर मंडल के मंडल उपाध्यक्ष रविन्द्र देशमुख द्वारा की गई आत्महत्या मामले में रंजीत सिंह एवं प्रकाश शिवहरे के नाम सोसाईट नोट में आने से आपराधिक प्रकरण दर्ज हुआ है जिसे पार्टी ने अत्यंत गंभीर माना है। अतः भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा के निर्देश पर रंजीत सिंह व प्रकाश शिवहरे को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से तत्काल निष्कासित किया गया है। गौरतलब है कि भाजपा नेता रविंद्र देशमुख सुसाइड केस में फरार चल रहे आरोपियों की गिरफ्तारी को लेकर व्यापारी और कुंबी समाज संगठन लंबे समय मांग कर रहे है। कुछ दिनों पहले ही व्यापारियों ने सारणी क्षेत्र में आधे दिन का बंद रखकर नर्मदापुरम संभाग के आईजी के नाम ज्ञापन सौंपा था। वहीं सारणी, आमला, भैंसदेही कुंबी समाज ने भी ज्ञापन सौंपकर फरार आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की थी। हालांकि पुलिस लगातार फरार आरोपियों की गिरफ्तार के प्रयास कर रही है, लेकिन पुलिस के हाथ अभी तक सफलता नहीं लग पाई है।

केंद्रीय राज्यमंत्री डीडी उईके श्रद्धांजलि कार्यक्रम में हुए शामिल

स्व श्रीमती बुधिया बाई उईके को पुष्पांजलि अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

बैतूल। केन्द्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उईके शनिवार को बैतूल में स्व.बुधिया बाई उईके के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उईक ने स्व.बुधिया बाई उईके के छायाचित्र के समक्ष पुष्प अर्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की तथा शोक संतृप्त परिवारजनों को ढांढस बंधाया। इस अवसर पर शोकाकुल परिवार के परशुराम उईके, रामराव उईके, राम किशोर उईके सहित बड़ी संख्या में अन्य परिवारजन उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शामिल हुए पांसे

मुलताई। ग्राम नीमनवाड़ा में शिक्षक विजय धोटे के पिता सेवानिवृत्त प्रधान पाठक स्व. साहेबराव धोटे का विगत दिनों निधन हो गया था। जिनका तेरहवीं श्रद्धांजली कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्रद्धांजली कार्यक्रम में मप्र शासन के पूर्व कैबिनेट मंत्री सुखदेव पांसे भी शामिल हुए। श्री पांसे ने कार्यक्रम में पहुंचकर शोक संवेदनाएं व्यक्त की।

मासूम बच्चों को ठंड से बचाने सर्दी की वर्दी अभियान चलाया

बैतूल। जिला चिकित्सालय में शनिवार प्रात- अभिनव कार्यक्रम आयोजित किया गया। समाजसेवी धीरज हिरानी के मार्गदर्शन में नवजात शिशुओं को ठंड से बचाने सर्दी की वर्दी अभियान प्रारंभ किया गया। अभियान की शुरुआत जिला चिकित्सालय के सिविल सर्जन डॉक्टर अशोक बारंगा, समाजसेवी नेमीचंद मालवीय, समाजसेवी शैलेंद्र बिहारिया, दीप मालवीय ने की। कार्यक्रम में नवजात शिशुओं के लिए कपड़े, मोजे, टोपे बाटे गए। वहीं ग्रामीण महिलाओं के लिए शाल भेंट की गई। इस अवसर पर सर्दी की वर्दी अभियान की सराहना करते हुए अतिथियों ने कहा की यह सराहनीय पहल है। समाजसेवी धीरज हिरानी ने ठंड में सभी से जरूरतमंदों को गर्म कपड़े भेंट करने की अपील की है।

लायंस क्लब महक ने बच्चों को वितरित किए गर्म कपड़े

बैतूल। गरीब बच्चों को स्कूल जाते समय ठंड से बचाने के लिए लायंस क्लब महक बैतूल ने गर्म कपड़े वितरित किए। इस सेवा कार्यक्रम में लायंस क्लब की चेयरपर्सन लायन कंचन आहूजा ने 100 से अधिक बच्चों को वुलन पायजामा, टीशर्ट, और बनियाने भेंट की। लायंस क्लब की चेयरपर्सन कंचन आहूजा ने बताया कि कंचन होजियरी के संचालक शंकर आहूजा ने इस कार्य में मदद करते हुए लायंस क्लब महक को स्कूली बच्चों को सर्दी से बचाने लिए गर्म कपड़े उपलब्ध कराए है। कार्यक्रम के दौरान लायंस क्लब की प्रेसिडेंट दीप्ती दुबे ने बच्चों को ठंड से बचने के प्रभावी उपाय बताए। उन्होंने बच्चों को समझाया कि सर्दी में खुद को सुरक्षित रखना कितना जरूरी है और इसके लिए किन सावधानियों को अपनाना चाहिए। इस पूरे आयोजन में स्कूल की प्राचार्या और उनकी टीम ने भी पूरे उत्साह के साथ सहयोग किया। वहीं महक क्लब की सेक्रेटरी लायन रंजना झोड ने अपने विशेष प्रयासों से इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

भूतपूर्व सैनिकों की त्रैमासिक बैठक 27 नवंबर को

बैतूल। अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव की अध्यक्षता में भूतपूर्व सैनिकों की त्रैमासिक बैठक 27 नवंबर 2024 को कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में प्रात- 11 बजे से आयोजित की गई है। कैप्टन (आईएएन) सुमीत सिंह सेवानिवृत्ति जिला सैनिक कल्याण अधिकारी ने भूतपूर्व सैनिकों एवं शहीद सैनिकों की पत्नियों से यथा समय बैठक में उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

धूमधाम से मनाई भैरव जयंती

हजारों लोग शामिल हुए भंडारा प्रसादी

बैतूल। श्री सागौनवाले बाबा दरबार निराला समिति के तत्वावधान में प्रतिवर्षानुसार काल भैरव जयंती समारोह धूमधाम से सागौन दरबार

में धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस मौके पर समिति के अनिल कुबड़े ने बताया कि श्री बटुकनाथ काल भैरव जयंती समारोह में शनिवार बाबा का अभिषेक, हवन-पूजन, श्रृंगार, के पश्चात भंडारा प्रसादी वितरण किया गया। शनिवार रात्रि हजारों ऋद्धालुओं ने बाबा के दर्शन उपरांत प्रसादी ग्रहण की। जिसमें बैतूल के आस-पास के क्षेत्र के लोग भी शामिल थे।

उर्वरकों की निरंतर हो रही आपूर्ति, जिले में लगेगी डीएपी की रैक

अधिक दामों पर उर्वरक बेचने वाले दो दुकानदारों के लायसेंस निरस्त

बैतूल। जिले में किसानों को निरंतर उर्वरकों की आपूर्ति सुनिश्चित हो रही है। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी द्वारा उर्वरकों की उपलब्धता और वितरण की सतत मॉनिटरिंग की जा रही है। उपसंचालक कृषि ने बताया कि रबी में अभी तक 2.28 लाख हेक्टेयर में फसलों की बुवाई हो चुकी है। जिले में कृषकों को अभी तक रबी मौसम में 21233 मीट्रिक टन यूरिया, 6055 मेट्रिक टन एसएसपी, 6339 मेट्रिक टन डीएपी, 1036 मीट्रिक टन एसओपी, तथा 4392 मेट्रिक टन एनपीके वितरित किया जा चुका है। वर्तमान में 9534 मेट्रिक टन यूरिया, 7322 मीट्रिक टन एसएसपी, 735 मीट्रिक टन डीएपी, 1071 टन एसओपी तथा 885 मीट्रिक टन एनपीके जिले में उपलब्ध है। कृषकों की रबी सीजन को मांग को देखते हुए 107 मेट्रिक टन टीएसपी तथा 62 मेट्रिक 20-20-013 का भंडारण कम उपलब्धता वाले उर्वरक वितरण केन्द्रों पर किया गया। दो रैक एनएफएल यूरिया हाल ही में जिले को प्राप्त हुआ। आगामी एक-दो दिन में आईपीएल कंपनी की रैक से 2750 मेट्रिक टन जिले को प्राप्त होगा। इधर किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग बैतूल ने मेसर्स गायत्री कृषि सेवा केन्द्र चिचोली एवं मेसर्स गणेश कृषि सेवा केन्द्र चिचोली द्वारा किसानों को अधिक दामों पर उर्वरक विक्रय किए जाने पर लाइसेंस निलंबित किए जाने की कार्रवाई की है। जानकारी के अनुसार चिचोली विकासखंड की दो उर्वरक दुकानों द्वारा किसानों को अधिक दामों पर डीएपी तथा एनपीके उर्वरक बेचे जाने की शिकायत सामने आई थी। प्राप्त शिकायत के बाद जिला स्तरीय गुण नियंत्रण दल द्वारा 16 नवंबर को जांच की गई, जिसमें चिचोली विकासखंड के ग्राम गोदना निवासी कृषक निलेश पिता नान्हू उइके के द्वारा डीएपी उर्वरक एवं ग्राम गोदना निवासी कृषक रामदेव पिता उमन कवडे द्वारा एनपीके उर्वरक किसानों को अधिक दाम पर विक्रय करना पाया गया। पंजीयन प्राधिकारी एवं उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास डॉ. आनंद कुमार बडोनिया ने उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 की धारा-31 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए मेसर्स गायत्री कृषि सेवा केन्द्र चिचोली को जारी उर्वरक विक्रय प्राधिकार आरएस/447/1404/52/2020 पीआर-493 तथा मेसर्स गणेश कृषि सेवा केन्द्र चिचोली को जारी उर्वरक विक्रय प्राधिकार आरएस/447/1401/11/2022 को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया है।

बिना रजिस्ट्रेशन नंबर के सडक़ों पर चल रहे वाहनों के विरुद्ध यातायात पुलिस की कार्रवाई

109 वाहनों से 44,500 का वसूला शमन शुल्क

बैतूल। बैतूल जिले में बड़ी संख्या में वाहन खरीदे जा रहे हैं, परंतु वाहन स्वामी समय पर वाहनों का रजिस्ट्रेशन नहीं करा रहे हैं। इस कारण बिना रजिस्ट्रेशन नंबर वाले वाहनों की संख्या सडक़ों पर बढऩे लगी है। ऐसे वाहनों का उपयोग अक्सर असामाजिक तत्वों द्वारा आपराधिक गतिविधियों में किया जाता है। इस समस्या के समाधान के निर्देशानुसार जिले भर में विशेष अभियान चलाया जाकर चालानी कार्यवाही की गई है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बैतूल श्रीमती कमला जोशी के निर्देशन में थाना प्रभारियों द्वारा स्वयं उपस्थित रहकर अलग-अलग मार्गों पर सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान 41 वाहनों में रजिस्ट्रेशन नंबर अंकित नहीं होने पर 20,500 तथा अन्य उल्लंघनों के लिए 68 वाहनों पर 24,000 का शमन शुल्क वसूला

गया। कुल मिलाकर 109 वाहनों से 44,500 का शमन शुल्क जमा कराया गया। इसके अतिरिक्त, यातायात पुलिस द्वारा एक प्रयास अभियान के तहत सीएम राइज स्कूल, बैतूल बाजार में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती कमला जोशी, एसडीओपी बैतूल एवं शाहपुर की उपस्थिति में छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों की जानकारी दी गई। जिसमें नाबालिग बच्चों को वाहन न चलाने, गलत दिशा (रॉन्ग साइड) में वाहन न चलाने, दोपहिया वाहन पर चालक और पीछे बैठे व्यक्ति दोनों के लिए हेलमेट, यातायात संकेतों की जानकारी जागरूकता रथ के माध्यम से प्रदान की गई। पुलिस अधीक्षक बैतूल का कहना है कि यह अभियान आगे भी जारी रहेगा ताकि जिले में यातायात व्यवस्था को सुरक्षित और सुव्यवस्थित बनाया जा सके।

महिला आईटीआई कोसमी में निःशुल्क चिकित्सा शिविर कल

बैतूल। महिला आईटीआई परिसर में जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर के मार्गदर्शन में जिला आयुष विभाग द्वारा प्रचार प्रसार निःशुल्क मेगा चिकित्सा शिविर का आयोजन कल सोमवार को किया जायेगा। वैध आपके द्वार आयुष क्योर एप के प्रचार-प्रसार औषधीय पौधो की जानकारी योग मेडिटेशन का महत्व एवं सरल योग क्रियाओं की जानकारी एवं आयुर्वेदिक होम्योपैथिक चिकित्सा विभाग के चिकित्सकों की विशेष

उपस्थिति में 10 बजे से शिविर समाप्ति तक उपचार किया जायेगा। इस मेगा निःशुल्क मेगा चिकित्सा शिविर डॉ प्रियंका अहिरवार, होम्योपैथी चिकित्सा अधिकारी, डॉ लक्ष्मी किशनानी, आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी, डॉ शारदा चौधरी आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी, डॉ लक्ष्मी बरोदे ,संविदा होम्योपैथी , डॉ नैनसी राठौर , सी.ए.एम.ओ., श्रीमती त्रेवेणी कटरे आयुर्वेद कम्पाउंडर, श्रीमती शशिकला शेण्डे, आयुर्वेद कम्पाउंडर, सतीश श्रीवास्तव, होम्योपैथी कम्पाउंडर, ममता पाठेकर, महिला आयुर्वेद स्वास्थ्य कार्यकर्ता, श्रीमती उर्मिला चढ़ोकार, महिला आयुर्वेद स्वास्थ्य कार्यकर्ता, सरजू रहेडवा, श्रीमती सविता मसराम, , रामप्रसाद पंवार, औषधालय सेवक, आप सभी की उपस्थिती में मरीजों का उपचार व निःशुल्क दवाओं का वितरण किया जायेगा, विभाग द्वारा डॉ विजय तांडिलकर, आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी, आयुष्मान आरोग्य मंदिर पाढर, बैतूल को मेगा निःशुल्क चिकित्सा शिविर का नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया था।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव की महाविजय पर भाजपा ने मनाया जश्न, फटाखे फोड़कर बांटी मिठाई

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय विजय भवन में शनिवार को महाराष्ट्र विधानसभा चुनावो में भाजपा के महायुति गठबंधन की महाविजय पर जीत का जश्न जोरदार तरीके से मनाया। सुबह से ही रुझानों के बाद जिला भाजपा कार्यालय में कार्यकर्ता जुटते रहे देर शाम फटाखे फोडकर कार्यकर्ताओ,

पदाधिकारीयो ने एक दूसरे को मिठाई खिलाई इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला ने कहा कि महाराष्ट्र की जनता ने देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व पर विश्वास जताया है। महायुति गठबंधन की सरकार के सुशासन और बढते महाराष्ट्र के विश्वास की भी विजय हुई है। इस अवसर पर पूर्व सांसद सुभाष आहूजा, ज्योति धुर्वे, पूर्व जिलाध्यक्ष जितेन्द्र वर्मा, जिला महामंत्री सुधाकर पंवार, जिला उपाध्यक्ष इंद्रपाल पुण्डे, जिला मंत्री अतीत पंवार, मधु पाटनकर, पूरन साहू, अजय पंवार, प्रवीण वराठे, बिरजू पारखे, कुणाल शर्मा, जतीन पाल, सहित बडी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

स्व- सहारिया की श्रद्धांजलि सभा

दूसरों का सुख छीना छोड़ते ना, लहू पीना जीना ऐसे नीचों का हराम कर जाऊंगा

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। विख्यात बुन्देली कवि स्वर्गीय राजेन्द्र सहारिया की श्रद्धांजलि सभा का आयोजन परिवार जनों ने वाटिका गार्डन में किया था। इस श्रद्धांजलि सभा में नगर ही नहीं दूरदराज शहरों करेली, सिवनी मालवा, इटारसी आदि के गणमान्य नागरिकों के अलावा स्वर्गीय सहारिया के रिश्तेदारों के साथ भारी संख्या में मातृशक्ति आदि से वाटिका गार्डन परिसर खचाखच भरा हुआ था। इस श्रद्धांजलि सभा में करेली की साखी साहित्य परिषद के सदस्यों के साथ पूर्व राज्यसभा सदस्य कैलाश सोनी विशेष रूप से उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि स्वर्गीय राजेन्द्र सहारिया के आकस्मिक निधन के पूर्व

करेली की साखी साहित्य परिषद ने स्वर्गीय राजेन्द्र सहारिया का नागरिक अभिनंदन राज्यसभा सांसद के आतिथ्य में किया। इस अभिनंदन समारोह में नगर दो कवि शरद व्यास एवं अमित बिल्लौरे भी वहां उपस्थित थे। करेली से काफी संख्या में कवियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते पूर्व राज्यसभा सांसद कैलाश सोनी ने कहा कि यहां नागरिकों की उपस्थिति से स्वर्गीय राजेन्द्र सहारिया जी के व्यक्तित्व का प्रभाव झलकता है। आप सोहागपुर ही पूरे प्रदेश के बुन्देली कवि के रुप में विख्यात थे। वरिष्ठ वकील चौधरी माधवसिंह ने श्रीमद्भगवद्गीता का उल्लेख करते स्वर्गीय राजेन्द्र सहारिया को कालिदास की उपाधि दी। कवि सौरभ सोनी ने सहारिया नवीन कवियों को पांडू पुत्र अर्जुन की तरह तराशने का कार्य करते थे। करेली साखी साहित्य परिषद के प्रोफेसर माधव श्रीवास्तव ने कहा कि सहारिया जी सोहागपुर ही नहीं देश देशांतर में हमेशा याद रखें जाएंगे। कवि अमित बिल्लौरे ने करेली में साखी साहित्य परिषद द्वारा सहारिया जी के नागरिक अभिनंदन का साक्षी कवि शरद व्यास एवं स्वयं को बताया। कार्यक्रम को कवि शैलेन्द्र शर्मा , पलकमती साहित्य परिषद अध्यक्ष प्रबुद्ध दुबे, वरिष्ठ वकील जे .पी. माहेश्वरी,तारा जायसवाल, पूर्व पार्षद लक्ष्मीनारायण सोनी, राजकुमार दुबे इटारसी, बृजकिशोर पटैल पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी, सिवनी मालवा के मालवीय जी करेली मूर्धन्य कवि नारायण श्रीवास्तव,शरद व्यास, शंभू दरबार के प्रकाश मुद्गल आदि ने कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन कवि अमित बिल्लौरे ने किया।इस श्रद्धांजलि सभा में विधायक विजयपालसिंह पूर्व नपाध्यक्ष राजेन्द्रसिंह चौधरी, पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय, वकील प्रांजल तिवारी, अभिषेकसिंह चौहान, वकील राजू तिवारी, संचालन अमित बिल्लौरे, वकील राजू तिवारी, कृष्णा पालीवाल, वकील ठाकुर हरिहर सिंह, पूर्व अधिवक्ता संघ अध्यक्ष बी के शर्मा, वकील शिरीष तिवारी, मिश्रीलाल साहू , वकील अखिलेश मालवीय, प्रशांत बसेडिया, मुस्लिम त्योहार कमेटी अध्यक्ष वसीम खान, गोलू अग्रवाल,शरद चौरसिया,नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटैल , पार्षद विश्वकर्मा आदि से सभागार भरा हुआ था। इस अवसर स्वर्गीय सहारिया के अनुज अरविंद सहारिया एवं पारिवारिक सदस्य उपस्थित थे। पारिवारिक सदस्यों ने एक श्रद्धांजलि बुकलेट आगंतुकों को प्रदान की। उक्त बुकलेट में स्वर्गीय राजेन्द्र सहारिया की प्रमुख रचनाएं थी। जिसमें उक्ति उल्लेखनीय रचना÷ मेरा इतिहास ना रखूँगा कभी खास ,मेरी एक-एक श्वास सरे आम कर जाऊँगा। चंदन सी प्रीत मेरे जीवन की रीत मेरे गीत सभी अपनों के नाम कर जाऊँगा। काट दूँगा अंधियारा पियूँगा ज़हर सारा नीलकंठ सा दुबारा काम कर जाऊँगा। दूसरों का सुख छीना छोड़ते ना लहू पीना ,जीना ऐसे नीचों का हराम कर जाऊँगा ।

मतदाता सूची में नाम जुड़वाने किया प्रेरित

बैतूल। कलेक्टर और जिला निर्वाचन अधिकारी नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर वार्षिक संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम 2025 के तहत उप जिला निर्वाचन अधिकारी मकसूद अहमद के मार्गदर्शन में बैतूल में स्वीप प्लान के अंतर्गत विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया।जिसके माध्यम से नए मतदाताओं का नाम जुड़वाने स्वीप आईकान शैलेंद्र बिहारिया, सोशल मीडिया स्वीप आईकान तूलिका पचोरी के नेतृत्व में सर्वप्रथम नेहरू युवा केंद्र और आरडी क्लासेस में युवाओं और समाज के प्रमुखों को वार्षिक संक्षिप्त पुनरीक्षण 2025 की जानकारी दी। स्वीप आईकान शैलेंद्र बिहारिया ने पन्ना धाय की देश भक्ति का प्रेरक प्रसंग सुनाते हुए कहा कि एक मां जब अपनी मातृभूमि के लिए अपने पुत्र चंदन का बलिदान कर सकती है तो हम अपने देश के मजबूत लोकतंत्र के लिए मतदाता सूची में नाम क्यों नही जुड़ा सकते। उन्होंने फॉर्म नंबर

छह, सात और आठ की जानकारी देकर नाम जोडऩा, कटवाना और संशोधन करने की जानकारी दी। उन्होंने सभी को वोटर आईडी कार्ड का महत्व बताया। इस अवसर पर तूलिका पचोरी ने बताया कि वोटर आईडी कार्ड का उपयोग कहा कहां किया जाता है। उन्होंने सभी अहर्ता दायक युवाओं को प्राथमिकता से ऑनलाइन या ऑफलाइन आवेदन करने अपील की। इस अवसर पर शिक्षक अशोक रघुवंशी ने भी सभी बच्चों को नाम जुड़वाने सहयोग की बात कही। उन्होंने सभी युवाओं से कहा कि अपने ग्रामों में जाकर पात्र युवाओं का आवेदन बूथ लेवल ऑफिसर के पास अवश्य कराएं।

नाना पाटेकर ने जो कहा उससे सनसनी मची!

नाना पाटेकर अपने बेबाक बयान के लिए इंडस्ट्री में जाने जाते हैं। नाना पाटेकर ने कई बार ऐसे बयान दिए हैं, जिससे इंडस्ट्री में हंगामा हुआ और कई बार राजनीतिक मुद्दे पर भी बोले। इन दिनों नाना पाटेकर अपनी अपकमिंग फिल्म 'वनवास' के प्रमोशन में बिजी हैं। ये फिल्म 20 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म के प्रमोशन के लिए नाना पाटेकर एक पॉडकास्ट में शामिल हुए, जिसमें उन्होंने अपने रिटायरमेंट और फिल्म के निर्देशक अनिल शर्मा के बारे में बात की, जिन्होंने फिल्म 'गदर-2' का निर्देशन भी किया।

इस पॉडकास्ट में नाना पाटेकर से सवाल किया कि हर कोई उनके साथ काम करने से डरता क्यों है! इस पर एक्टर ने जवाब देते हुए कहा कि अनिल शर्मा एक बकवास आदमी है। 'गदर' हिट होने के बाद वह मुझसे हर दिन मिलता और बताता था कि कहानी ऐसी है कहानी वैसी है। लेकिन, उसने कभी सामने से फोन नहीं किया। इसके अलावा, नाना पाटेकर से उनके रिटायरमेंट पर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि वे नहीं जानते हैं कि बिना काम के वे कैसे रहेंगे और वह अपने फ्यूचर को इसी तरह देखते हैं।

वे हमेशा कैमरे के आगे या पीछे ही रहना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि हम मर गए होते या पागल हो गए होते। हमने किसी को मार डाला होता। हमारे पास यही है। हमारे पास जो कुछ भी है, उसे हम हटा नहीं सकते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि काम उनकी लाइफ का एक ऐसा हिस्सा बन गया है कि जिससे बिना जीवन अधूरा है।

अनिल शर्मा ने फिल्म 'वनवास' का ऐलान 12 अक्टूबर को किया था। इस फिल्म को अनिल शर्मा ने कलयुग की रामायण कहा गया है। फिल्म में नाना पाटेकर के साथ अनिल शर्मा के बेटे उत्कर्ष शर्मा भी हैं। फिल्म की कहानी बाप-बेटे के ऊपर है। अनिल शर्मा फिल्म में बाप-बेटे के गहरे रिश्ते को दिखाने वाले हैं। इस फिल्म को लिखा भी अनिल शर्मा ने लिखी है।

'द साबरमती रिपोर्ट' टैक्स फ्री, पर कमाई में फिसड्डी

चर्चित फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' का निर्देशन रंजन चंदेल ने किया है। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 15 नवंबर को दस्तक दी। मूवी में विक्रांत मैसी की एक्टिंग की न सिर्फ दर्शक बल्कि क्रिटिक्स भी जमकर तारीफ कर रहे हैं। इस फिल्म में विक्रांत मैसी के अलावा इसमें राशि खन्ना और रिद्धि डोगरा ने अहम किरदार निभाए हैं। फिल्म को रिलीज हुए आज 9 दिन हो गए हैं।

ऐसे में अब मूवी के गुरुवार के आंकड़े सामने आ चुके हैं। जानते हैं कि फ़िल्म ने अब तक कितनी कमाई की है। 'द साबरमती रिपोर्ट' की कहानी की बात करें तो ये बेहद ही दमदार है। अक्सर देखा जाता है कि रियल लाईफ घटना पर आधारित फिल्मों को दर्शक काफी पसंद करते हैं। लेकिन, विक्रांत मैसी की फिल्म की कहानी का असर बॉक्स ऑफिस कलेक्शन पर नजर नहीं आ रहा। हाल ही में फिल्म को मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के अलावा हरियाणा में भी विक्रांत मैसी की इस फ़िल्म को टैक्स फ्री किया गया है।

फिल्म की रेटिंग को लेकर बात की जाए तो इसे आईएमडीबी ने 10 में से 8.3 की रेटिंग दी है। गूगल पर इसे 5 में से 4.6 की रेटिंग मिली हुई है। मूवी ने ओपनिंग डे पर 1.25 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया था। अब गुरुवार के आंकड़े भी सामने आ चुके। रिपोर्ट के अनुसार, विक्रांत मैसी की फिल्म ने 7वें दिन 1.10 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया। ऐसे में फिल्म का कुल कलेक्शन 11.45 करोड़ रुपए हो गया है।

'बीवी नंबर वन' फिर रिलीज होगी, डेट सामने आई

सलमान खान और करिश्मा कपूर की फिल्म 'बीवी नंबर 1' एक बार फिर से सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है। मेकर्स ने फिल्म का ट्रेलर भी रिलीज कर दिया। उन्होंने फिल्म की रिलीज डेट का भी ऐलान किया है। 90 के दशक में सलमान खान और उनकी फिल्मों ने लोगों के दिलों पर राज किया। आज भी लोग सलमान की पुरानी फिल्मों को बड़े मजे से देखना पसंद करते हैं।

कुछ महीनों में देखा गया है कि पुरानी हिट फिल्मों को फिर से सिनेमाघरों में रिलीज किया जा रहा है। इस लिस्ट में शाहरुख खान से लेकर रणबीर कपूर तक की फिल्मों के नाम शामिल हैं। अब बारी सलमान खान की है। सलमान की 25 साल पुरानी फिल्म फिर से थिएटर में दस्तक देने जा रही है, जिसका ट्रेलर भी रिलीज कर दिया गया है।

सलमान खान, करिश्मा कपूर और सुष्मिता सेन स्टारर फिल्म 'बीवी नंबर 1' 1999 की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में से एक है। अब 25 साल बाद मेकर्स इस कॉमेडी-ड्रामा फिल्म को फिर से रिलीज कर रहे हैं। मेकर्स ने इस फिल्म का ट्रेलर भी रिलीज कर दिया। ये तो सभी जानते हैं कि पुरानी फिल्मों के ट्रेलर नहीं हुआ करते थे, ऐसे में मेकर्स ने पहली बार 'बीवी नंबर 1' का ट्रेलर रिलीज किया। इतना ही वहीं 'बीवी नंबर 1' की रिलीज की तारीख भी सामने आ गई है। सलमान खान की ये फिल्म इसी महीने फिर से रिलीज हो रही है। इस फिल्म को डेविड धवन ने डायरेक्ट किया था और अब ये फिल्म 29 नवंबर को सिनेमाघरों में दस्तक देने जा रही है।

रियल बॉक्स

ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों का जादू बरक़रार

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

हिंदी सिनेमा ने अपने सौ साल से ज्यादा लंबे इतिहास में कई उतार-चढाव देखे। इनमें कुछ संघर्ष भरे, कुछ अच्छे थे, कुछ बहुत अच्छे और यादगार पड़ाव रहे। शुरुआती समय में फ़िल्में बनाना बेहद दुष्कर काम था! पर, जैसे-जैसे तकनीक समृद्ध हुई, फिल्मकारों के काम में भी रचनात्मकता आती गई। तकनीकी सुधार से फिल्मांकन, संगीत और डायरेक्शन में बहुत बदलाव आया। शुरू के दौर में जो फ़िल्में ब्लैक एंड व्हाइट बनती थीं, वे धीरे-धीरे रंगीन होने के साथ बेहतर होती गई। जब फिल्मों ने जीवन की वास्तविकता रंग लिए, तो लोगों ने ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों को लगभग भुला दिया। लेकिन, आज भी उस दौर की कुछ फ़िल्में ऐसी हैं, जो अपनी कहानी, डायरेक्शन, फिल्मांकन और अभिनय के मामले में आज की फिल्मों पर भारी हैं। 70 के दशक के बाद तो ब्लैक एंड व्हाइट फ़िल्में बनना बंद ही हो गई! लेकिन, ब्लैक एंड व्हाइट काल की कुछ यादगार फ़िल्में ऐसी हैं, जिन्हें आज भी पसंद किया जाता है।

ये फ़िल्में उन पुरानी विंटेज कार की तरह हैं, जिनमें बैठने वाला अपने आपमें कुछ अलग ही महसूस करता है। क्योंकि, ये फ़िल्में भी किसी विंटेज से कम नहीं! सभी तो नहीं, पर कुछ कालजयी फ़िल्में जरूर हैं, जो आज भी देखी जाती हैं। ये वे फिल्में हैं, जो जीवन की सच्चाइयों से रूबरू कराने के साथ कई सामाजिक मुद्दों की तरफ इंगित करती हैं। इन फिल्मों के कलाकार भी अपने दौर के वे लोग हैं, जिनके अभिनय का आज भी लोहा माना जाता है। पसंद की जाने वाली फिल्मों में 1949 की फिल्म 'महल% को रखा जा सकता है। कमाल अमरोही के निर्देशन में बनी इस फिल्म में अशोक कुमार और मधुबाला ने काम किया था। ये पुनर्जन्म से जुड़ी अलौकिक सस्पेंस थ्रिलर फिल्म थी। ये दो प्रेमियों के मिलन और बिछड़ने की कहानी है। एक महल में दो प्रेमी आधी रात को मिलते हैं। एक दिन प्रेमी एक हादसे का शिकार हो जाता है और प्रेमिका से मिलने नहीं आ पाता। कई सालों के बाद नया मालिक अशोक कुमार वहां रहने आता है, तब रहस्य सामने आता है। इसमें मधुबाला ने दोहरी भूमिका निभाई थी।

ऐसी ही एक फिल्म है 1951 में आई 'आवारा' है, जिसका निर्देशन करने के साथ राज कपूर ने इसमें काम भी किया था। इस फिल्म ने देश-विदेश में कामयाबी के कई झंडे गाड़े थे। फिल्म में पृथ्वीराज कपूर ने जज की भूमिका निभाई थी। इसी साल (1951) में आई फिल्म 'अलबेला' का निर्देशन मास्टर भगवान ने किया और इसके कलाकार थे गीता बाली और मास्टर भगवान। फिल्म की कहानी एक गरीब पर केंद्रित थी, जो अपनी बहन की शादी के लिए पैसे नहीं जुटा पाता है। घर से निकलते समय अमीर के रूप में लौटने की कसम खाता है। जब वो वापस लौटता है, तो उसे पता चलता है कि उसकी माँ अब जीवित नहीं है। उसने सालों तक जो पैसे घर भेजे, वे भी गायब थे। निर्देशक बिमल रॉय की फिल्म 'दो बीघा ज़मीन' (1953) में बलराज साहनी, मुराद, निरूपा रॉय ने काम किया था। रवींद्रनाथ टैगोर की बंगाली कविता 'दुई बीघा जोमी' इस फिल्म की नींव थी। इस फिल्म में गरीब किसान ठाकुर हरनाम सिंह (मुराद) के हाथों गरीब किसान शंभू महतो (बलराज साहनी) के संघर्ष और जबरन वसूली का दर्द भरा चित्रण था। किसान और उसका परिवार दो एकड़ जमीन बचाने के लिए अपना जीवन ख़त्म कर देते हैं, जो उनकी जीविका का एकमात्र साधन होता है।

1954 में आई फिल्म 'बूट पॉलिश' को प्रकाश अरोड़ा ने निर्देशित किया था। इसके कलाकार कुमारी नाज़, रतन कुमार, चंदा बुर्के और डेविड थे। यह फिल्म भाई-बहन भोला (रतन कुमार) और बेलू (कुमारी नाज़) की कहानी थी। मां की मौत के बाद, क्रूर चाची कमला देवी (चंदा बुर्के) भाई और बहन को सड़क भिखारी बनने के लिए मजबूर करती है। जॉन अंकल (डेविड अब्राहम) की मदद से भोला और बेलू अपनी चाची के खिलाफ जाने और जीवन जीने का फैसला करते हैं। 1955 में आई फिल्म 'बाप रे बाप' को अब्दुल रशीद कारदार ने निर्देशित किया था। किशोर कुमार, चाँद उस्मानी, स्मृति बिस्वास की ये फिल्म एक सुपर-हिट कॉमेडी थी। ब्लैक एंड व्हाइट दौर की राज कपूर निर्देशित क्लासिक फिल्मों में 'श्री 420' (1955) को भी गिना जाता है। इसमें राज कपूर के साथ नरगिस और नादिरा थे। फिल्म एक गांव के लड़के रणबीर राज की कहानी है, जो अपनी किस्मत आजमाने शहर जाता है। वहां उसे विद्या (नरगिस) से प्यार हो जाता है। राज शहर में कई चालाक लोगों से मिलता है, जो

उसे धोखाधड़ी का जीवन जीने के लिए सिखाते हैं। यह फिल्म रूस में बहुत लोकप्रिय हुई थी।

1956 में आई 'जागते रहो' निर्देशक अमित मित्रा की फिल्म थी, जिसमें राज कपूर, प्रदीप कुमार, स्मृति बिस्वास और नरगिस थे। फिल्म की कहानी में एक गरीब व्यक्ति के बेहतर जीवन जीने की उम्मीद की कहानी थी। लेकिन, यह भोला किसान लालच और भ्रष्टाचार के जाल में फंस जाता है। 'जागते रहो' भारतीय सिनेमा की क्लासिक फिल्मों में एक है। इसे रूसी बॉक्स ऑफिस पर भी ब्लॉक बस्टर घोषित किया गया था। इसी तरह 1957 में आई 'प्यासा' निर्देशक गुरुदत्त की फिल्म थी, जिसमें गुरुदत्त के साथ वहीदा रहमान, माला सिन्हा ने काम किया था। इसकी कहानी है एक कवि का संघर्ष था जो अपनी कविताओं को प्रकाशित करने के लिए संघर्ष करता है। वह उस वेश्या गुलाबो (वहीदा रहमान) से मिलता है, जो उसकी कविता से प्यार करती है। अबरार अल्वी फिल्म के लेखक थे।

1957 में आई फिल्म 'नया दौर' बीआर चोपड़ा ने बनाई थी। इसमें दिलीप कुमार, वैजयंती माला और अजीत थे। इसकी कहानी में शंकर (दिलीप कुमार) घोड़ा गाड़ी खींचकर आजीविका कमाता है। लेकिन, मकान मालिक सेठ जी (नजीर हुसैन) के बेटे कुंदन (जीवन) को शंकर और साथी धमकाते हैं। क्योंकि, वह उसी मार्ग पर बस की सवारी शुरू करता है। ब्लैक एंड व्हाइट काल की 'मधुमती' (1958) भी आज पसंद की जाने वाली फिल्मों में एक है। इसके निर्देशक बिमल रॉय थे और इसमें दिलीप कुमार, वैजयंती माला, प्राण और जॉनी वॉकर ने काम किया था। 'मधुमती' एक सदाबहार रोमांटिक फिल्म है, जिसमें दो जन्मों की कहानी थी। 1958 की फिल्म 'चलती का नाम गाड़ी' निर्देशक सत्येन बोस ने निर्देशित की थी। इसमें किशोर कुमार, अशोक कुमार और अनूप कुमार के साथ मधुबाला थी। 1959 में आई गुरुदत्त की फिल्म 'कागज़ के फूल' में गुरुदत्त के साथ वहीदा रहमान और वीणा सप्रू थे। अबरार अल्वी की कहानी पर बनी 'कागज़ के फूल' गुरुदत्त के जीवन की कहानी थी, जो बेहद दुखद थी।

हिंदी सिनेमा की सबसे क्लासिक कही जाने वाली फिल्मों में एक 'मुगल-ए-आज़म' (1960) को के आसिफ ने निर्देशित किया था। इसमें पृथ्वीराज कपूर, मधुबाला, दिलीप कुमार और दुर्गा खोटे ने काम किया था। फिल्म की कहानी प्रेम और पिता के जिद्दी स्वभाव और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर गढ़ी गई थी। फिल्म में मुगल राजकुमार सलीम (दिलीप कुमार) और दरबारी अनारकली (मधुबाला) की प्रेम कहानी पर प्रकाश डाला गया है। बाद में इस फिल्म को नई तकनीक से रंगीन बनाया गया था। कहा जा सकता है कि इस फिल्म को दोहराया नहीं जा सकता। निर्देशक विजय आनंद की 'काला बाज़ार' (1960) में देव आनंद, वहीदा रहमान और नंदा थे। ये विजय आनंद की सफल ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म थी। फिल्म में रघुवीर (देव आनंद) एक यात्री के साथ बहस से बस कंडक्टर की नौकरी गंवाने के बाद कालाबाजारी करने लगता है। बाद में वो महसूस करता है कि वो गलत रास्ते पर है। 1961 में आई 'काबुलीवाला' निर्देशक हेमेन गुप्ता की फिल्म थी। इसमें बलराज साहनी, बेबी सोनू, बेबी फरीदा ने अभिनय किया था। इसकी कहानी ड्राई फ्रूट बेचने अब्दुल रहमान खान (बलराज साहनी) की थी।

'साहिब बीबी और गुलाम (1962) को गुरुदत्त की फिल्मों के लेखक अबरार अल्वी ने निर्देशित किया था। इसके कलाकार मीना कुमारी, गुरुदत्त, रहमान थे। फिल्म में कई फ्लैशबैक हैं। इस फिल्म में कई डायलॉग भी क्लासिक थे। फिल्म 'बंदिनी' (1963) को निर्देशक बिमल रॉय की क्लासिक फिल्मों में गिना जाता है। इसमें अशोक कुमार, नूतन, धर्मेंद्र थे। इसकी कहानी एक महिला कैदी नूतन और डॉ देवेंद्र (धर्मेंद्र) पर केंद्रित है। 'बंदिनी' एक एक महिला कैदी की दुखद और भावनात्मक कहानी है। 1963 में राष्ट्रीय पुरस्कार के अलावा, इस फिल्म ने 1964 के फिल्मफेयर पुरस्कारों में कई श्रेणियां जीतीं। 1967 की फिल्म 'रात और दिन' निर्देशक सत्येन बोस की फिल्म थी, जिसमें नरगिस, प्रदीप कुमार और फिरोज खान ने काम किया था। यह फिल्म एक महिला केंद्रित ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म थी। इसके अलावा और भी कई ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों हैं, जिन्होंने हिंदी सिनेमा में अपनी पहचान बनाई। इनमें अनमोल घड़ी (1946), आर पार (1954), देवदास (1955), चोरी चोरी (1956) और हावड़ा ब्रिज (1958) भी हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

एक था अलबेला भगवान दादा

अशोक जोशी

भगवान दादा के जीवन का संघर्ष, उसमें तरह-तरह के उफान, सिफर से शिखर और फिर सिफर पर लौट कर औंधे मुंह गिरना एक जीवंत और रोंगटे खड़े करने वाली कहानी है। जिस पर अगर फिल्म बने तो सुपर-डुपर हिट होने की गारंटी है।

भगवान अपने अच्छे दिनों में खराब दिनों को याद करते हुए कहे इन शब्दों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि वो किस किस्म के इंसान थे। उन्होंने किस किस्म का संघर्ष किया। फारेस रोड से लैमिंग्टन रोड तक का सफर यों तो महज़ पंद्रह-बीस मिनट का है, मगर मुझे यह फासला तय करने में पूरे बारह साल खर्च करने पड़े।

बंबई की एक चाल में 1 अगस्त 1913 का जन्मे भगवान आभाजी पालव के पिता कपड़ा मिल में मामूली मजदूर थे। मगर उनके बेटे भगवान ने चाल में रह कर महलों के ख्वाब देखने का गुनाह बार-बार किया। मोटा थुलथुल जिस्म, चौड़ा चौखटा और ऊपर से छोटा कद. चाल में रहने वालों को उनके महलों के ख्वाब देखने पर हंसी आई पहलवान दिखते हो एक्टर नहीं। भगवान दादा कुश्ती के भी बेहद शौकीन थे, इसलिए सब उन्हें प्यार से भगवान दादा कहते रहे। इसी नाम से वे मशहूर भी हुए। फिल्म स्टूडियो के चक्कर लगाते हुए कई जोड़ी जूते घिसे। कभी-कभी तो खाना भी नसीब नहीं हुआ। हलक के नीचे पानी के दो घूंट उतारकर गुजर की। मगर संघर्ष जारी रहा। सपनों की नगरी बंबई में जिसने सपना देखना छोड़ा, समझो वो मरा। आखिर भगवान की किस्मत भी खुली। एक स्टंट फिल्म में छोटी सी भूमिका मिली। नाम था उसका क्राइम जो 1938 में बनी साइलेंट फिल्म थी। भाव की अभिव्यक्ति संवाद बोल कर नहीं बल्कि चेहरे की जंबिश और हाथ-पैर बेतरह हिला कर करनी पड़ी थी।

शौक और जुनून क्या कुछ नहीं कराता। भगवान दादा ने छोटे-छोटे स्टंट और मज़ाकिया रोल करके इतना पैसा कमा लिया कि चेंबूर में एक छोटा-मोटा जागृति स्टूडियो खोल लिया। जागृति स्टूडियो। एक फिल्म बनाई बहादुर किसान। लागत आई 65 हज़ार रुपए। स्पॉट ब्याय से लेकर प्रोड्यूसर, डायरेक्टर का काम खुद किया। 1938 से लेकर 1951 तक भगवान दादा ने अनेक लो बजट फिल्में बनाई। स्टंट व एक्शन, मिक्सड विद थोड़ा सा कॉमिक। फिल्में चाल और झुग्गी-झोंपड़ियों में रहने वाले कामगारों-मजदूरों में खासी लोकप्रिय हुईं। यही कारण था कि भगवान दादा बंबई की चालों और झुग्गी झोंपड़ियों में रहने वालों की पहली पसंद बन गए। बताते हैं कि 1951 तक भगवान दादा ने 65 स्टंट और एक्शन फिल्में बनाई। इस दौरान 1941 में तमिल फिल्म 'वानी माहिनी' भी बनाई। इसमें तमिल के मशहूर

एक्टर एमआर राधा के अलावा श्रीलंकाई एक्ट्रेस थावामनी देवी ने भी काम किया। ये एक सफल और लैंडमार्क फिल्म थी। लेकिन, अफसोस की बात यह है कि इन 65 फिल्मों में एक भी सुरक्षित नहीं है। वक्त की मार उन्हें खत्म कर दिया।

भगवान दादा के फिल्मों के प्रति समर्पण और जुनून को देखते हुए राज कपूर ने उन्हें सोशल फिल्में बनाने का मशविरा दिया। फिल्म भी बनी, फिल्म क्या बनी एक इतिहास ही रच डाला। सुपर-डुपर हिट हुई। गीता बाली के साथ भगवान खुद नायक थे, दिल के भोले-भोले और प्यारे-प्यारे प्यारेलाल की भूमिका में. फिल्म का नाम था 'अलबेला!' राजेंद्र कृष्ण के गीतों पर चितलकर रामचंद्र का म्यूज़िक था जो आज भी इतिहास में गूंजता है। शोला जो भड़के दिल मेरा धड़के .... और ओ भोली सूरत, दिल के खोटे, नाम बड़े और दर्शन छोटे ... बरसों तक हर प्रकार के कार्यक्रमों में बजते रहे और हर वर्ग के लोग इस पर खूब थिरके। इन्हीं गानों में भगवान दादा का स्लो मोशन स्टेप डांस बहुत लोकप्रिय हुआ। इधर परदे पर भगवान दादा नाचते और उधर सिनेमा हाल में दर्शक. बताया जाता है कि यह पहली फिल्म रही, जिसमें दर्शक सिनेमा हॉल में नाचे थे। भगवान दादा के इस स्लो मोशन स्टेप डांस की बाद में अमिताभ बच्चन, मिथुन चक्रवर्ती और गोविंदा ने भी जमकर नकल की। अब ये बात दूसरी है कि दर्शक ओरीजनल को भूलकर नकलचियों में खो गए।

भगवान दादा ने 'अलबेला' की सफलता के बाद 'झमेला' और 'लाबेला' बनायी। सफलता भगवान दादा के सर चढ़कर इतना ज्यादा बोली कि अहंकार में परिवर्तित हो गई जिसमें उनका डूबना

लाज़िमी बन गया। दोनों फिल्में सुपर-डुपर फ्लाप हुईं। 1956 में 'भला आदमी' से फिर कोशिश की। इसमें आनंद बक्शी ने पहली बार चार गाने लिखे थे। बक्शी ने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। सफलता ने उन्हें बुलंदियों पर बैठा दिया। लेकिन, इस मुकाम पर पहुंचाने वाला बंदा भगवान धरातल पर ही रह गया। पहले चेंबूर का दो मंज़िला जागृति स्टूडियो बिका। इसी में उन्होंने मेकअप, कास्टयूम, एडिटिंग, साउंड रेकार्डिंग आदि के अलग-अलग विभाग भी बना रखे थे, जिसमें 70 आदमियों का स्टाफ दिन-रात कार्यरत था। ये सब भी खत्म हुआ। फिर जुहू में समन्दर को तकता हुआ बंगला हाथ से गया। शेवरोले और अमीरों की शान बड़ी इंपाला सहित कई कारों का फ्लीट भी एक-एक करके बिदा हुआ। इसके साथ ही भगवान दादा जहां से चले थे, वहां का सफ़र पूरा हुआ। उसी चाल में वापस आ गए जहां से ऊपर की ओर चले थे।

भगवान दादा निराश जरूर हुए, मगर टूटे नहीं। गौरवशाली अतीत को भुलाकर लोगों से बोले कि यार, जुहू वाले बंगले में नींद नहीं आती थी। अब आराम से अपने लोगों के बीच अपने घर में खूब सोऊंगा। दूसरे दिन से वही पुराना भगवान दिखने लगा, स्टूडियो-स्टूडियो काम की तलाश में चक्कर लगाता हुआ। भाग्य चक्र उल्टा घूम गया। जिन्होंने कभी काम के लिए भगवान दादा के चक्कर लगाए थे, भगवान दादा काम के लिये उनके चक्कर काटने लगे। जो भी रोल मिला लपक लिया। एक शाट वाले रोल के तक के लिए राजी हुए। इस दौर में सिर्फ वी शांताराम की 'झनक झनक पायल बाजे' और राज कपूर की 'चोरी चोरी' की दमदार भूमिकाएं ही यादगार रहीं। नाच-गाने वाले दृश्यों में अक्सर उन्हें स्लो मोशन में स्टेप डांस करते हुए ठुमके लगाते देखा जाता रहा। देखने वाले कहते 'वो देखो भगवान दादा, अलबेला वाला!' कुछ अरसे बाद नई पीढ़ी आ गई जो भगवान दादा और उनके संघर्ष से परिचित नहीं थी। ऐसे में सिर्फ पुरानी पीढ़ी के लोग ही भगवान दादा को भीड़ में पहचानते। कभी सातवें आसमान पर उड़ने वाला बंदा एक-दो शाट वाले रोल के लिये भी डायरेक्टर को झुक कर दिल से शुक्रिया अदा करता और फिर तपाक से सेल्यूट मारता, आज की रोटी को इंतज़ाम तो हुआ।

उम्र बढ़ रही थी। बुढ़ापे वाले तमाम रोगों ने आ घेरा। बढ़िया इलाज के लिये जेब में पैसा नहीं था। ऐसे बुरे हालात में उनसे मिलने और मदद करने उनके पुराने साथी कामेडियन ओम प्रकाश, संगीतकार सी रामचंद्र और गीतकार-संवाद लेखक राजेंद्र कृष्ण को छोड़कर कोई नहीं आया। भगवान दादा ने आखिरी सांस अपने एक कमरे के चाल में बड़ी फ़कीरी में ली। क़रीब चार सौ फिल्मों में काम कर चुका बंदा तन्हा था, बिलकुल टूटा और हताश। पैरालिसिस ने उन्हें व्हील चेयर तक सीमित कर दिया। जबकि उनके चार बेटे और तीन बेटियां भी थीं, लेकिन सब उन्हें उनके हाल पर छोड़ चुके थे। 4 फरवरी 2002 के दिन उन्हें जबरदस्त हार्ट अटैक आया। उन्हें कोई अस्पताल भी नहीं ले गया, उस वक़्त वो 89 साल के थे। उनकी अंतिम यात्रा में ज़्यादातर चाल के ही लोग थे। सिनेमा के पुराने दोस्त ही शामिल हुए। कोई नामी हस्ती नहीं थी। उनके हमदर्द तो उनसे पहले ही जिंदगी का सफ़र पूरा कर चुके थे और अब भगवान दादा का भी शिखर से सिफ़र तक का सफ़र खत्म हुआ।

'मतलब नहीं रहता... सताते भी नहीं!'

प्रकाश पुरोहित

तब टेरिलिन का चलन शुरू ही हुआ था। लड़के का मन था कि स्कूल में और भी बच्चे पहन रहे हैं तो उसे भी शर्ट सिलवा दिया जाए। उसने मां से कहा। अब मां के हाथ में तो यह था नहीं कि खरीदे और सिलवा दे। ठीक है, कमाई उनके हाथ में आती थी, लेकिन पति यानी बच्चे के पिता की इच्छा और मंजूरी के बगैर कुछ नहीं हो सकता था। सो, सही वक्त का इंतजार किया जा रहा था। तभी पिताजी का जन्मदिन आ गया। मां ने डरते-डरते पूछ लिया- 'टेरिलिन का शर्ट सिलवा दें आपको? कहते हैं, अच्छा रहता है, प्रेस की भी झंझट नहीं रहती।' थोड़ी ना-नुकुर के बाद इजाजत मिल गई। कुछ दिन बाद 'मुन्ना को भी सिलवा दें टेरिलिन की शर्ट?' अनमने मन से मंजूरी मिल गई। यानी मुन्ना को शर्ट सिलवाने के लिए कितने जतन और इंतजार करना पड़ा कि घर-स्वामी नाराज ना हो जाए, जबकि घर पर मां का ही अधिकार है और वो ही घर चलाती है। ये उस जमाने की बात है, जब पति की मर्जी से ही घर चलता था और बगैर पूछे या मर्जी के महिला कुछ नहीं कर सकती थी, करती इसलिए नहीं थी कि कौन घर में क्लेश करे। शांति बनी रहे। लड़के को भी मां पर गुस्सा इसलिए आता था कि कुछ बोलती क्यों नहीं हैं? बिगाड़ के डर से ईमान की बात... तो बचपन से सिखा रही हो, लेकिन खुद अमल नहीं करती!

ला-जवाब नमस्ते...!

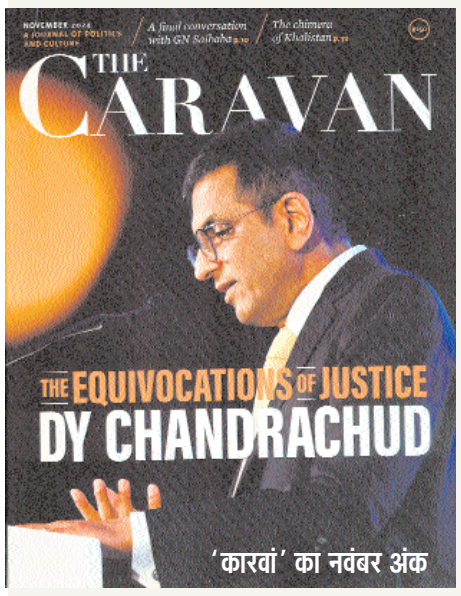

'कारवां' का नवंबर अंक

अभी न्यू जीलैंड के खिलाफ विराट कोहली और रोहित शर्मा समर्पण करते रहे और भारत को शर्मनाक पराजय घर में ही झेलनी पड़ी। 'अपनी गली के शेर, खुद ही हो गए ढेर' जैसी बातें होने लगीं। बात तो यहां तक पहुंच रही है कि इन दोनों को टेस्ट मैच से बाहर ही कर दिया जाना चाहिए। इनसे बेहतर तो नए लड़के खेल रहे हैं, जिनके नाम भी लोगों को ठीक से याद नहीं हैं। इस नाराजी की वजह यह है कि हमें इनसे हर समय उम्मीद रहती है कि भारत की नैया पार लगा देंगे। कई बार हुआ है कि विराट-रोहित की वजह से भारत ने जीत हासिल की है। नाराजी भी उनसे ही होती है, जिनसे हमें ज्यादा उम्मीद रहती है। किसी और की नाकामी पर इतना गुस्सा नहीं आता है, आलोचना नहीं होती है, लेकिन जब 'भरोसे की भैंस ही पाड़ा जन दे' तो कोई नाराज नहीं हो तो क्या करे!

ये दोनों प्रसंग अलग-अलग हैं, लेकिन जब हम रिटायर्ड सुप्रीम कोर्ट जज धनंजय यशवंत चंद्रचूड़ के बारे में हो रही बातें और लिखी जा रही अच्छाई-बुराई को देखते-सुनते हैं तो हमें खामोश मां और नाकाम खिलाड़ी की याद आने लगती है। हिंदी अखबारी पर्चे तो इस तरह की हिम्मत नहीं कर पा रहे हैं, लेकिन अंग्रेजी वाले धड़ल्ले से जज सा'ब की बखिया उधेड़ रहे हैं। यू-ट्यूब चैनल पर भी जोरदार खिंचाई हो रही है। कुछ नौजवान वकील उनके साथ भी खड़े नजर आ रहे हैं। आश्चर्य तो यह है कि पूर्व न्यायाधीश और वरिष्ठ वकील बेधड़क बोल रहे हैं और साबित कर रहे हैं कि चंद्रचूड़ के दो साल अच्छी बातों के लिए कम और गलत परंपरा के लिए ज्यादा दोहराए जाएंगे।

यह बात सभी मानते हैं कि उनमे गजब की समझ है, बुद्धिजीवी हैं, विद्वान हैं, बहुत पढ़ते हैं और सुबह चार बजे से काम शुरू कर देते हैं। जूनियर से सहजता से मिलते हैं और कोर्ट में कभी आपा नहीं खोते हैं। विवाद से दूर रहते हैं और निहायत पारिवारिक शख्स हैं। कोई लटके-झटके नहीं दिखाते हैं, लेकिन क्या इस महान पद पर रहते हुए सिर्फ ये खूबियां ही काफी हैं? क्या इसी के लिए उन्हें इस कुर्सी के काबिल समझा गया था?

इसी माह दिल्ली की खोजी मैगजीन 'कारवां' में जस्टिस चंद्रचूड़ पर लंबी खोज और लंबा लेख छपा है, जिसमें इस बात को बार-बार बताया गया है कि चीफ जस्टिस अपनी मर्जी का कुछ ज्यादा नहीं कर सके, जबकि चाहते तो कर सकते थे। सरकार को खुश करने या नाराज नहीं करने के चक्कर में या तो चुप रह गए या फिर कुछ नहीं किया। 'कारवां' में पत्रकार सौरव दास लिखते हैं- '13 मार्च, 2016। इलाहाबाद हाइकोर्ट के डेढ़ सौ साल का समारोह मनाया जा रहा था। उस समय धनंजय यशवंत चंद्रचूड़ चीफ जस्टिस हाइकोर्ट थे, जो कि दो माह बाद ही सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस होने जा रहे थे। आम सहमति से यह तय किया गया था की इस समारोह के लिए किसी भी राज-नेता को नहीं बुलाया जाएगा। कहा गया 'ये हाइकोर्ट का समारोह है, नेता का यहां क्या काम!' तब चंद्रचूड़ का मानना था कि सत्ता केंद्र को अलग ही रहने दिया जाए। ना तो मुख्यमंत्री और ना ही पीएम को न्यौता गया। हां, उस समय राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी और चीफ जस्टिस टीएस ठाकुर को ही आमंत्रित किया था। कानून मंत्री सदानंद देवगौड़ा को भी बुलाया था कि उनका ही विभाग था। न्यायिक आजादी को बरकरार रखने की गरज से यह फैसला चंद्रचूड़ ने लिया था।

सितम्बर 2024। अब दृश्य एकदम बदल गया। वही चंद्रचूड़ अपने घर में गणेश आरती कर रहे हैं और उनके साथ खड़े हैं प्रधानमंत्री मोदी। आरती की थाली मोदी के हाथ में है, जो मराठी बाने में हाजिर हैं और चीफ जस्टिस ताली बजा रहे हैं। यह दृश्य इसलिए अखरने वाला रहा कि कुछ दिन बाद ही चंद्रचूड रिटायर हो रहे थे और जल्द ही महाराष्ट्र में चुनाव होना थे। अब यह तो कोई बताने लायक बात नहीं है कि किसने मोदी को घर पर आरती के लिए न्यौता दिया होगा, क्योंकि पूरी सुरक्षा लगानी होती है पीएम के आने से पहले और फिर हमारे देश में पीएम कहीं भी मुंह उठा कर तो जा नहीं सकते हैं। उस पर भी चीफ जस्टिस सफाई दे रहे हैं कि ऐसा होना, अनहोनी नहीं है। अब यदि उन पर यह आरोप लग रहे हैं कि कुछ पाने की गरज से यह तमाशा किया है तो क्या गलत है!

लेख में यह बताया गया है कि पिता की वजह से उन्हें कई बार बेजा फायदा मिला है। सीनियर जज को पीछे कर चंद्रचूड़ को आगे किया गया। नियम भी बदले गए और राज्यवाद का भी सहारा लिया गया। अगर राम जेठमलानी और सोली सोराबजी महाराष्ट्र के नहीं होते तो महाराष्ट्रीयन चंद्रचूड़ को कभी इतनी तरक्की नहीं मिलती। उनकी काबिलियत पर शक नहीं, लेकिन हर कुर्सी उन्हें समय से पहले दी गई और यही अपराध-बोध उन्हें कमजोर करता रहा। सरकार के खिलाफ कभी कोई फैसला नहीं दिया। लगता रहा जैसे सरकार की मर्जी से फैसले लिए जा रहे हैं। अपने ही कुछ फैसले बदलने में भी हिचक नहीं दिखाई। विरोधी दल की सरकार को तंग करना हो या जमानत का मसला हो, ऐसे ही जज को केस सौंपा जाता था, जो सीधे भाजपा की गुड-लिस्ट से आता था। अपने फैसले, अपने हिसाब से करवाते रहे और दूसरों के मामले में कभी नहीं बोले। जज की नियुक्ति के मामले में सरकार की दखलंदाजी को अनदेखा करते रहे। सरकार जिस जज को जहां चाहती थी, भेजते रहे।

मध्यप्रदेश हाइकोर्ट चीफ जज सुरेश कुमार कैत का भी ऐसा ही किस्सा है कि उन्हें जाना कहीं और था, यहां भेज दिए गए, जबकि संधवालिया को यहां भेजा जाना तय था, मगर सरकार को मंजूर नहीं था। इस चक्कर में दो माह तक ऑर्डर रोके रखा। याद रहे नूह और गुरुग्राम में बुलडोजर के खिलाफ संधवालिया ने सरकार को कठघरे में ला दिया था कि सिर्फ मुस्लिमों के घर ही क्यों तोड़े गए, जबकि मरने वालों में ज्यादा मुस्लिम ही थे। इसीलिए उन्हें अभी तक पोस्टिंग नहीं मिली है। कैत ही हैं, जिन्होंने सुप्रीम कोर्ट की हिदायत, जमानत की सुनवाई दो हफ्तों में हो, उमर खालिद और अठारह मुलजिमों की जमानत का केस अटकाए रखा।

कोई एक किस्सा नहीं है, पढ़ते-पढ़ते थक जाएंगे, लेकिन रुकेंगे इसलिए नहीं कि चंद्रचूड़ ने भले ही सरकार की मुंह देखी की हो, खुश किया हो, हां में हां मिलाई हो, स्वतंत्र पत्रकार ने कच्चा चिट्ठा खोल कर रख दिया है। इस बारे में करीब चालीस पूर्व जज और वरिष्ठ वकीलों, चंद्रचूड़ के दोस्तों और सहयोगियों से बात की गई। खुद जज साहब से भी बात करनी चाही तो उन्होंने जवाब नहीं दिया, सवाल भेजे तो भी जवाब नहीं आया। इस बहाने कई पुराने किस्से भी याद आते हैं कि उस समय कितना गलत किया था। चंद्रचूड़ से नाराजी की वजह यही है कि उनसे बेहतर की उम्मीद थी और निराशा हाथ लगी है। जितनी जल्दी हो सके, 'कारवां' का यह अंक खरीद लीजिए, दस्तावेज है, काम आता रहेगा!

क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

विश्व महिला हिंसा उन्मूलन दिवस और 'इट एंड्स विद अस'

हम 25 नवंबर को 'अंर्तराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस' मनाने जा रहे हैं। संयोग देखिये नेटफ्लिक्स पर मैंने अभी एक अंग्रेजी मूवी देखी 'इट एंड्स विद अस'। बहुत छोटी सी मूवी है पर बहुत गहरा संदेश देती है। किस तरह आदमी में हिंसा पनपती है, पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है, कैसे बच्चों का जीवन खराब होता है। बातें सब मनोवैज्ञानिक है पर सांकेतिक तौर पर दिखाई है। जो इन पीड़ाओं से गुज़रा है वो झट समझ जाता है। घरेलू हिंसा से गुज़रने वाली और घरेलू हिंसा करने वाला दोनों ही तकलीफों से गुज़रते हैं। एक बालिग हिंसा करने वाला क्षमा के काबिल इसलिये नहीं है कि जब उसे पता है उसने घरेलू हिंसा का रौद्र रूप देखा है तो उसे दोहराना नहीं चाहिये।

कहानी कुछ यूँ है कि लड़की अपने फूल बेचने की दुकान का सपना लिये, अचानक एक न्यूरोलॉजिस्ट से मिलती है। दोनों में हलो-हाय होती है। दोनों के विचार भी मिलते हैं। मुलाकात वहीं ख़त्म हो जाती है। लड़की अपनी शानदार फूलों की दुकान खोलती है। उसे मदद के लिये एक खुशमिज़ाज लड़की भी मिल जाती है। वो कहती है एक दिन के लिये वो अपने पति और भाई को भी मदद के लिये बुला लेती है। संयोग देखिये उस लड़की का भाई न्यूरोलॉजिस्ट ही निकलता है। लड़का बहुत करीब होने की कोशिश करता है। हार कर लड़की उसे दोस्त बना लेती है। दोनों घूमते फिरते हैं।

लड़की की एक फ्लैश बैक स्टोरी साथ-साथ चलती है जिसमें वो 16-17 साल की है। एक गरीब लड़का भी उसी की उम्र का साथ चलता है। हालांकि उनकी टीन एज की स्टोरी पूरी फिल्म में चलती है। दोनों में प्रेम हो जाता है। लड़की के माँ बाप जब बाहर जाते हैं तब लड़की उसे घर में शरण देती है। एक दिन पिता जल्दी आ जाते हैं और उन्हें प्रेम करते देख लेते हैं। अब ये लड़का मार पीट कर भगा दिया जाता है। वो ये बताता है कि उसके पिता माँ को शारीरिक रूप से प्रताड़ित करते थे इसलिये वो घर छोड़ आया। फिर वो लड़का बोस्टन चला जाता है।

न्यूरोलॉजिस्ट के साथ उसकी अच्छी ट्यूनिंग हो जाती है। लड़की की माँ उससे आकर मिलती है। न्यूरोलॉजिस्ट को पता चलता है कि लड़की के पिता और माँ अलग रहते हैं क्योंकि वो उन पर हिंसा करते थे। इसी बीच जिस रेस्ट्रा में वो डिनर लेते हैं वेटर जब सर्व करता है तो लड़की उसके हाथ की अंगूठियाँ देख उसे पहचान लेती है। बाथरूम जाने के बहाने से मिलता है उसका पुराना बॉयफ्रेंड। वह उससे पूछता है कि ये लड़का अच्छा है ना जिससे तुम शादी करने जा रही हो? तुम

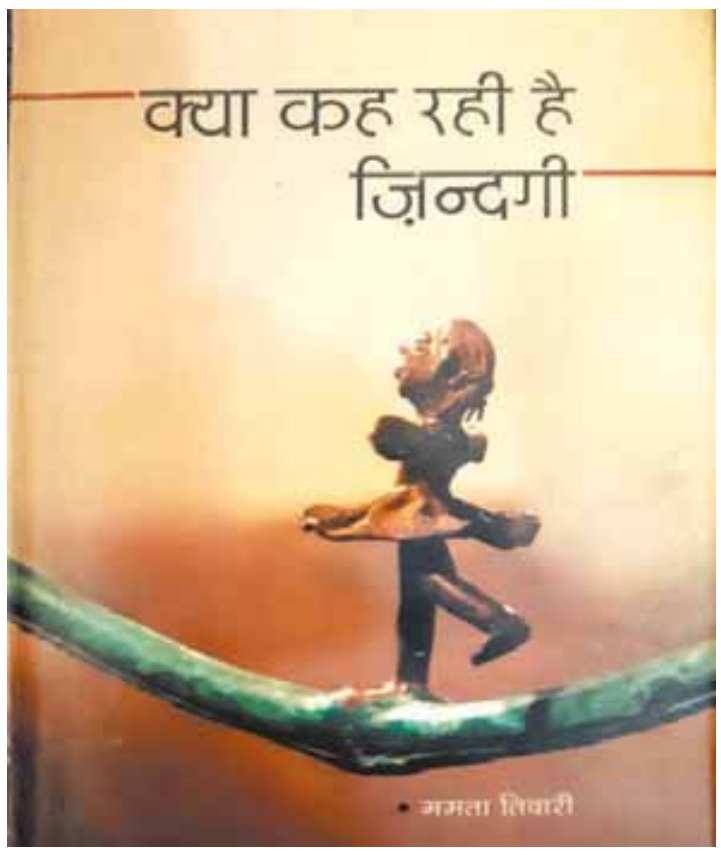

खुश तो हो ना? लड़की हाँ कहती है! लड़की के पूछने पर वो कहता है वो भी एक लड़की से डेट कर रहा है।

'रूट' नाम का वो रेस्ट्रा बहुत फेमस रहता है। इधर बेध्यानी में लड़की से किचन में आग जैसी लगती है। न्यूरोलॉजिस्ट उसे बचाता है। कुछ निशान उसके गले माथे पर लग जाते हैं। शाम को वो फिर उसी रेस्ट्रा में जाने की बात करता है। पुराना बॉयफ्रेंड बताता है दोनों को, कि वो यहाँ का शैफ है। लड़की फिर बाथरूम का बहाना बना कर जाती है। पुराना बॉयफ्रेंड बाथरूम में घुस के जोर से चिल्लाता है क्या उसने तुम्हें मारा? उसे अपने पिता का माँ को मारना याद आता है। तभी न्यूरोलॉजिस्ट अंदर आता है औश्र उसे खूब पीटता है। वह लड़की को घर ले जाकर पूछता है वो एटलस है ना? (क्योंकि लड़की उसे अपनी पुरानी लव स्टोरी सुना चुकी रहती है)। वो कहता है कोई बात नहीं और चिढ़ते चिढ़ते उससे जबर्दस्ती करने की कोशिश करता है। वो सीढ़ी से भागते गिर कर बेहोश हो जाती है। होश आने पर वो न्यूरोलॉजिस्ट से पूछती है क्या हुआ था? वो माफी मांगता है और कहता है तुम सीढ़ी से फिसल गई थी।

अचानक एक दिन पुराना बॉयफ्रेंड उसकी फ्लावर शॉप पर आता है उसे देखने। न्यूरोलॉजिस्ट चिढ़ जाता है और बुरी तरह हाथापाई करता है। लड़की जान बचाकर अपने पुराने बॉयफ्रेंड से हेल्प मांगती है। वो उसे अस्पताल ले जाता है। डॉक्टर उससे पुलिस केस करने को कहती है और उसे बताती है वो प्रेग्नेंट है। तब वो कुछ दिन अपने पुराने बॉयफ्रेंड के घर रहती है। इसी बीच लड़की की माँ आती है। दोनों एक घर लेकर बच्चे के लिये घर सैट करती हैं। न्यूरोलॉजिस्ट शर्मिंदा हो उसकी हेल्प करता है। उससे घर चलने को कहता है वो बात टाल देती है।

वो उसे बच्चा होने तक पूरा सहयोग करने देती है, उसे झिड़कती नहीं, क्योंकि वो उसके बच्चे का पिता है। न्यूरोलॉजिस्ट खुश हो जाता है। न्यूरोलॉजिस्ट की बहन लड़की से कहती है कि अगर तुम मेरे भाई को और बर्दाश्त करोगी तो मैं नाराज़ हो जाऊँगी। अब लड़की कहती है उसे डायवोर्स चाहिये। वो हतप्रभ रह जाता है। लड़की को उसकी बहन बताती है कि बचपन में खेलते समय उसके हाथ से गन चल गई थी और उसके हाथों उसका भाई मारा गया था। लड़की उस कुंठा से निकलने में उसकी मदद भी करती है और अपनी बच्ची का नाम न्यूरोलॉजिस्ट के भाई के नाम पर रखती है, क्योंकि वो उसके हालात समझ उसे माफ कर देती है पर उससे दूर चली जाती है। डायवोर्स ले लेती है।

सबसे पहले देखा आपने, बच्चों द्वारा देखी गई घरेलू हिंसा उनका रिश्ता अविश्वासी बना देती है। हाँ बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो अपने पिता की गल्तियाँ नहीं दुहराते, पर अधिकांश लोग अपनी माँ के ऊपर हुई हिंसा का बदला अपनी पत्नी से लेते हैं कि मैं तुम्हें क्यों अच्छे से ट्रीट करूँ जबकि मेरी माँ दु:खी रही। पुराना बॉयफ्रेंड शादी नहीं करता क्योंकि उसके माँ बाप के रिश्ते अच्छे नहीं थे। घरेलू हिंसा के चलते जाने कितने रिश्ते, कितने बचपन खराब हुये। आप लोगों को हर समय नहीं पहचान सकते रिश्तों में कब कहाँ से हिंसा आ जाये। मैंने आजकल के कपल को खुलेआम बच्चों के सामने हिंसा करते देखा है और बाद में बच्चा अपनी दोस्त के साथ वहीं हिंसात्मक खेल खेलता है बचपन में। मेरे टोकने पर उसने बताया उसने मम्मी पापा को लड़ते देख सीखा है।

क्या आप जैसे बालिग लोगों को ये अब भी कहना पड़ेगा ना तो आप घरेलू हिंसा कीजिये, ना सहिये, शोर मचाइये, मदद लीजिये इसमें शर्मिंदगी की बात नहीं है। 'घर की बात घर में ही रहे' का फंडा छोड़ दीजिये। नहीं सहा जाये तो खुले आसमान के नीचे रहिये। हिंसा करने वाले दरिंदों के साथ नहीं। केवल शारीरिक नहीं मानसिक हिंसा भी घरेलू हिंसा का हिस्सा है। आपने कोई अपराध नहीं किया। आप खुशी-खुशी अपने आप से पूछिये और क्या कह रही है ज़िंदगी?

जीवन का पथ दुष्कर

फोटो: बंसीलाल परमार

हकीकत है ये रोशनी!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

धऑल वी इमेजिन एज लाइट' यानी वो सब जो रोशनी की कल्पना से जुड़ा है। पायल कपाड़िया की यह फिल्म अपने नाम को साकार करती है। तीस बरस में यह पहली फिल्म है जो कॉन फिल्म फेस्टिवल में ऑफिशियल सिलेक्शन में शामिल हुई और फिर दुनिया ने इस फिल्म के असर को देखा। न सिर्फ यह फिल्म शामिल हुई बल्कि अवार्ड भी जीत कर आई। ऑस्कर अवार्ड के लिए भारत से जाने वाली फिल्मों में सबसे मजबूत दावेदार होते हुए भी इस फिल्म को नहीं चुना गया और यह इस देश के तंत्र और यहां कलाकारों की कमजोरी को दिखाता है। ऑस्कर के लिए नाम चाहे न गया हो, लेकिन दुनिया भर में तो पायल की इस फिल्म का डंका बज रहा है।

'ऑल वी इमेजिन एज लाइट' मुंबई के अस्पताल में काम करने वाली नर्स प्रभा (कनि कुश्रुति), अनु (दिव्या प्रभा) और उनके साथ पार्वती (छाया कदम) की कहानी है। तीनों ही उम्र और जिंदगी के अलग-अलग पड़ाव पर हैं, लेकिन रिश्ता है, जो उन्हें जोड़े है। क्या यह रिश्ता इसलिए है, क्योंकि तीनों ही मुंबई से बाहर की है या इसलिए कि कहीं न कहीं उन्हें सहारा मिल रहा है? लंबे समय बाद कोई फिल्म किसी शहर को किरदार बना कर इस खूबसूरती से पेश कर रही है कि मुंबई की वो बारिश, बसों की भीड़, रेलवे स्टेशन खास बन गए हैं। महिलाओं को एक-दूसरे का सहारा बनते देखना, उनकी दोस्ती, झिझक, खुलकर हंसना और चुपचाप समंदर किनारे बैठे रहना इतनी नरमाहट से फिल्माया है कि सिनेमा घर में भी वो कहीं न कहीं अपना घर-सा लगता है।

फिल्म फेडरेशन ऑफ़ इंडिया की जिस कमेटी को ऑस्कर में भेजी जाने वाली फिल्म का चुनाव करना था, उसके अध्यक्ष का कहना था कि 'ऑल वी इमेजिन एज लाइट' को देखते हुए ऐसा लगा, जैसे हम कोई यूरोपियन फिल्म देख रहे हैं, जिसे भारत की कहानी के साथ फिल्माया है। अब इनसे सवाल कौन करे कि आखिर इंडिया क्या है या इंडियन फिल्म को कैसा होना चाहिए? इतना बड़ा देश है कि हर कोने में अलग इंडिया नजर आता है, ऐसे में ये किस इंडिया की फिल्म ढूंढ रहे हैं। 'ऑल वी इमेजिन एज लाइट' भारत में बाइस नवंबर को रिलीज हुई है। मौका मिले तो इस फिल्म को जरूर देखिए, हर किरदार पर लंबी-लंबी बात करने लायक यह फिल्म हर उस ताली और दाद की हकदार है, जो अनायास ही निकल पड़ती है। अगले हफ्ते यूके में रिलीज भी हो रही है। बड़ी स्क्रीन पर देखने का लालच सिनेमा घर तक ले ही जाएगा, यकीन है!